

# दक्ष®

(RSSB) राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

# पशु परिचर

भाग-ब

1000 + MCQ  
व्याख्या सहित

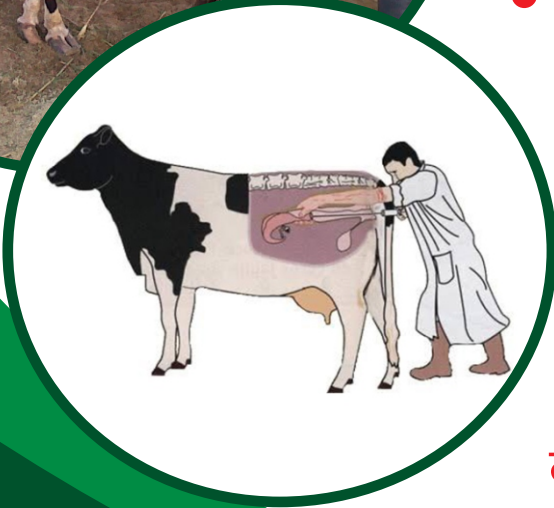
परीक्षोपयोगी अतिमहत्वपूर्ण प्रश्न

पढ़ो वहाँ से, जहाँ से प्रश्न पूछे जाएंगे

- Topicwise व्याख्यात्मक प्रश्न मानचित्र व सारणी के माध्यम से अध्ययन
- विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों का समावेश
- चित्रों के माध्यम से सरल अध्ययन

प्रश्न-45  
अंक-45

दीपक सैनी • नरपत सिंह



प्रकाशक :

परितोष वर्धन जैन  
कॉलेज बुक सेन्टर  
A-19, सेठी कॉलोनी,  
जयपुर-302 004

© सर्वाधिकार  
प्रकाशकाधीन

लेजर टाईपसेटिंग :



पूजा एण्टरप्राइजेज  
जयपुर

मुद्रक :  
के.डी. प्रिन्टर्स  
जयपुर।

## राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड [RSSB]

द्वारा आयोजित

★ परीक्षा की स्कीम एवं पाठ्यक्रम—पशु परिचर के पदों पर भर्ती हेतु परीक्षा की स्कीम निम्नानुसार हैं—

प्रश्न-पत्र का भाग	प्रश्नों की संख्या	कुल अंक	परीक्षा की अवधि
भाग-(अ)	105	105	03 घंटे
भाग-(ब)	45	45	
कुल योग	150	150	

नोट—

1. पाठ्यक्रम के अनुसार समान अंक वाले बहुविकल्पीय (वस्तुनिष्ठ प्रकार) के कुल 150 प्रश्न होंगे।
2. अधिकतम पूर्णांक 150 प्रश्न होंगे।
3. प्रत्येक सही उत्तर के लिये अधिकतम 1 (एक) अंक देय होगा।
4. प्रत्येक गलत उत्तर के लिये ¼ अंक काटा जावेगा।
5. प्रश्न-पत्र में न्यूनतम 40% अंक लाना अनिवार्य होगा।
6. परीक्षा का मानक स्तर सैकण्डरी का होगा।

### पाठ्यक्रम (Syllabus)

प्रश्नों की संख्या : 45

भाग-‘ब’ (भारंक 30 प्रतिशत)

पूर्णांक : 45

- ❖ पशुपालन से सम्बन्धित निम्न बिन्दुओं का सामान्य ज्ञान जिसमें प्रदेश में पशुओं की प्रमुख देशी नस्लें, कृत्रिम गर्भाधान, बधियाकरण, संकर प्रजनन, दुग्ध दोहन दुग्ध स्रवण काल, स्वच्छ दूध उत्पादन, पशु एवं कुक्कुट प्रबंधन, जैविक अपशिष्टों का निस्तारण, संतुलित पशु आहार, चारा फसलें, चारा/चारागाह विकास, स्वस्थ एवं बीमार पशुओं की पहचान, पशुओं में अंतः एवं बाह्य परजीवी रोग, पशुओं में टीकाकरण, पशुधन प्रसार, भेड़-बकरियों का स्वास्थ्य कलेण्डर, डन, मांस, दूध व अंडों का देश व राज्य में उत्पादन व स्थान, प्रति व्यक्ति दूध/मांस/अंडों की उपलब्धता, प्रति पशु दूध की उत्पादकता, ऊन कतरन, भार ढोने वाले पशु, वर्मी कम्पोस्ट खाद, पशुओं के चमड़े एवं हड्डियों का उपयोग, पशुओं की उम्र ज्ञात करना, पॉलीथीन से पशुओं/पर्यावरण को हानि, पशु बीमा, पशु क्रम के समय रखी जाने वाली सावधानियाँ, पशु मेलें, पशुगणना, गौशाला प्रबंधन, साफ सफाई का महत्त्व, गोबर मूत्र का उचित निष्पादन, पशुधन उत्पादों का विपणन, डेयरी विकास गतिविधियों तथा पशुपालन विभाग की प्रमुख योजनायें आदि का समावेश हो, पर वस्तुपूरक प्रकार के प्रश्न।

Code No.: D-741

- प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी प्रणाली के सहारे पुनःउत्पत्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके (इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिफॉर्डिंग, डिजिटल, वेब) के माध्यम से अथवा इस पुस्तक का नाम, टाइटल, चित्र, रेखाचित्र, नक्शे, डिजाइन, कवर डिजाइन, सेंटिंग, शिक्षण-सामग्री, विषय-वस्तु, पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी भाषा में हूबहू या तोड़-मरोड़ कर या अदल-बदल कर प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक के प्रतिलिप्याधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया गया है। पुस्तक के लेखन व प्रकाशन कार्य में लेखक, प्रूफ रीडर, कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरतने के बावजूद भी अधूरी या पुरानी जानकारी का होना/कुछ गलतियों/कमियों का रह जाना मानवीय भूलवश सम्भव है, जिसके लिए पुस्तक प्रकाशन से जुड़े मुद्रक, लेखक एवं प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।
- सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर (राज.) होगा।

# विषय-सूची

अध्याय नं.	अध्याय का नाम .....	पृष्ठ संख्या
<b>1</b>	पशुओं की प्रमुख देशी नस्लें [Major Indigenous Breeds of Animals].....	5
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	39
<b>2</b>	कृत्रिम गर्भाधान [Artificial Insemination] .....	46
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	51
<b>3</b>	बधियाकरण [Castration] .....	54
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	56
<b>4</b>	संकर प्रजनन [Hybrid Breeding] .....	59
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	63
<b>5</b>	दुग्ध दोहन दुग्ध स्रवण काल [Milk Exploitation, Milk Yield Period] .....	65
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	68
<b>6</b>	स्वच्छ दूध उत्पादन [Clean Milk Production] .....	69
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	79
<b>7</b>	पशुधन प्रबन्धन [Livestock Management] .....	83
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	89
<b>8</b>	कुक्कुट प्रबंधन [Poultry Management] .....	90
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	95
<b>9</b>	जैविक अपशिष्टों का निस्तारण [Disposal of Organic Wastes] .....	97
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	99
<b>10</b>	संतुलित पशु आहार [Balanced Animal Feed] .....	100
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	104
<b>11</b>	चारा फसलें [Fodder Crops] .....	105
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	113
<b>12</b>	चारा/चारागाह विकास [Fodder/Pasture Development] .....	115
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	117
<b>13</b>	स्वस्थ एवं बीमार पशुओं की पहचान [Identification of Healthy and Slack Animal] .....	118
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	120
<b>14</b>	पशुओं में अंतः एवं बाह्य परजीवी रोग [Internal and External Parasitic Diseases in Animal ] .....	121
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	134
<b>15</b>	पशुओं में टीकाकरण [Vaccination in Animal] .....	138
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	140
<b>16</b>	भेड़ बकरियों का स्वास्थ्य केलेण्डर [Health Calender of Sheep & Goats]..	141
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	141

अध्याय नं.	अध्याय का नाम .....	पृष्ठ संख्या
17	पशुधन प्रसार [Livestock Propagation] .....	142
18	ऊन, माँस, दूध व अंडों का देश व राज्य में उत्पादन व स्थान [Production and Location of Wool, Meat, Milk and Eggs in the Country and State] .....	146
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	148
19	ऊन कतरन [Wool Shearing] .....	153
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	154
20	भार ढोने वाले पशु [Animal Load Carrying] .....	155
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	155
21	वर्मी कम्पोस्ट खाद [Vermi Compost Fertilizer] .....	156
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	159
22	पशुओं के चमड़े एवं हड्डियों का उपयोग [Use of Skin and Bones of Animals] ...	159
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	159
23	पशुओं की उम्र ज्ञात करना [Determining the age of Animals] .....	161
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	167
24	पॉलिथीन सेवन से पशुओं/पर्यावरण को हानि [Harm to Animals/Environment due to Polythene] ...	170
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	173
25	पशु बीमा [Animal Insurance] .....	174
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	177
26	पशु क्रय करते समय रखी जाने वाली सावधानियाँ [Precautions to be taken at the time of Purchasing Animals] .....	178
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	180
27	पशु मेले [Animal Fairs] .....	182
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	184
28	गौशाला प्रबंधन साफ-सफाई का महत्त्व [Cow Shed Management, Importance of Cleanliness] .....	187
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	195
29	गोबर एवं मूत्र का उचित निष्पादन [Proper Disposal of Cow Dung and Urine] ..	196
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	197
30	डेयरी विकास गतिविधियाँ [Dairy Development Activities] .....	198
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	199
31	पशुपालन विभाग की प्रमुख योजनाएँ [Major Scheme of Animal Husbandry Department] .....	201
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	203
32	पशु गणना [Animal Census] .....	205
	❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर .....	207
33	अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य [Other Important Facts] .....	209
34	महत्त्वपूर्ण सारणियाँ [Important Tables] .....	213
35	विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न [Questions asked in Previous Exams] ..	235

## पशुपालन

# 1

## पशुओं की प्रमुख देशी नस्लें [Major Indigenous Breeds of Animals]

### पशुओं से सम्बन्धित प्रमुख शब्दावली

1.	जुताई के लिये हल को खींचने हेतु बेल के कंधे पर रखा जाने वाला भाग।	जुड़ा
2.	जुड़े के दोनों तरफ ऊपर से नीचे की ओर बनाए गए छिद्रों में लकड़ी की खूंटियाँ।	सोल/समेल
3.	चमड़े या सड़ का 7 हाथ लम्बा रस्सा जिससे जुड़े और हल को जोड़ा जाता है।	नाड़ा/नैण/नूणियाँ
4.	गाड़ी के जुड़े में बाँधी जाने वाली रस्सी।	नाड़ी
5.	बैल को नियंत्रित करने के लिए नाक में पहनाई जाने वाली रस्सी।	नाथ
6.	पशुओं को बाँधने में प्रयुक्त रस्सी।	सिंदरा
7.	बेल व ऊँट को बाँधने में प्रयुक्त रस्सी।	बेलचा
8.	पशु के मुँह पर बाँधी जाने वाली रस्सी जिसे खूटे से बाँध देते हैं।	मौरी
9.	वह रस्सी जिसे गाय को दुहते समय पिछली टाँगों पर कैचीनुमा बाँधते हैं।	नूजणो/न्याणा
10.	यह रस्सी पशु के आगे के टाँगों में बाँधी जाती है।	दावणा
11.	बैलगाड़ी में सामान बाँधने के लिये प्रयुक्त रस्सा।	बरा
12.	रस्सी का जालनुमा अवरोध जिसे मिट्टी खाने व दूध पीने से रोकने के लिये बछड़े के मुँह पर बाँधा जाता है।	छिक्की
13.	पशुओं को पानी पीने के लिए कुएँ के बाहर बनाया गया लम्बा हॉज तथा छोटे हॉज को खेल्ली/खेल कहा जाता है।	पो
14.	पशुओं को खेत में घुसने से रोकने के लिये खेत के चारों ओर काँटेदार टहनियाँ लगाना जैसे—बबूल, खेरी, खेजड़ी आदि।	बाड़
15.	पशुओं को रोकने के लिये बाड़ के स्थान पर मिट्टी की ऊँची दीवार बनाना।	डोल/डोझ
16.	कृषि कार्य एवं भार ढोने में उपयोगी बैलों से चलने वाली गाड़ी।	बैलगाड़ी/शकट
17.	जिस गाड़ी में सामान ढोया जाता है।	भरकस
18.	भारत के साथ-साथ भोजन, बरतन तथा सामान लेकर चलने वाली गाड़ी।	कोठी गइडो
19.	पहाड़ी प्रदेश में पत्थर ढोने के लिये तैयार की गई गाड़ी।	गाड़ो, रेडूकलयो
20.	बैलों को प्रशिक्षण देने के लिए जिस गाड़ी का उपयोग होता है।	रेडूकल्यो/ घीसोड़ी
21.	रथ की भाँति सुन्दर दिखने वाली छत वाली गाड़ी जिसमें माँच भी लगा होता है।	सगगड़
22.	घोड़ों को बाँधने में प्रयुक्त खूँटा कहलाता है।	मेख

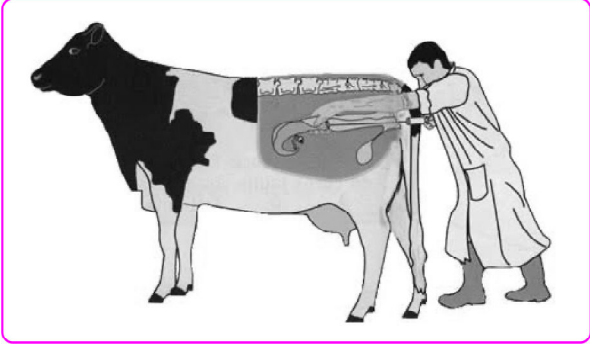
## 2

## कृत्रिम गर्भाधान [Artificial Insemination]

**परिभाषा**—कृत्रिम रूप से नर पशु का वीर्य या सीमन एकत्रित करके प्रयोग में लाने के समय तक उचित तरीके से सुरक्षित रखकर, वीर्य या सीमन की गर्भधारण करने की क्षमता की जाँच करके, हीट यानि ताव में आए मादा पशु की सर्विक्स या ग्रीवा में यंत्र द्वारा पहुँचाना ही कृत्रिम गर्भाधान/वीर्य सेचन कहलाता है।

**Note**—हीट या ताव के समय मादा के जनन अंग में सीमन (वीर्य) का कृत्रिम तरीके से संधारण कर पशु का गर्भाधान करना जिससे मादा पशु गर्भित हो सके।

भारतीय गायों का औसत दुग्ध उत्पादन विकसित देशों के पशुओं की अपेक्षा बहुत कम होता है क्योंकि नस्ल के अनुमान से भारतीय पशु उन्नत नस्ल के नहीं हैं इसलिए कृत्रिम गर्भाधान द्वारा संकर पशु (उन्नत) तैयार कर दुग्धोत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।



कृत्रिम गर्भाधान

### कृत्रिम गर्भाधान का इतिहास

- ❖ **1300 A.D.**—चौदहवीं सदी में छपी एक अरबी पुस्तक के अनुसार कुछ हॉर्स ब्रीडर्स ने पहली बार घोड़ी में कृत्रिम गर्भाधान किया था। उन्होंने अपने दुश्मन के एक प्रसिद्ध अरबी नस्ल के घोड़े का सीमन प्राकृतिक गर्भाधान के बाद घोड़ी की वेजाइना से रूई द्वारा खुद की घोड़ी में डाला था।
- ❖ **1677**—ल्युवन हॉक व उसके शिष्य जॉन हैम ने नर के सीमन में स्पर्मेटोजोआ यानि नर गैमिट की पहचान की।
- ❖ विश्व में प्रथम कृत्रिम गर्भाधान **1777 ई.** में लाफार्ज स्पेलेन्जानी द्वारा किया गया।
- ❖ **1780**—इटली के वैज्ञानिक एल. स्पेलेन्जानी ने पहली बार पशुओं में सफल कृत्रिम गर्भाधान की। कई छोटे जलधारी
- जीवों में कृत्रिम गर्भाधान, के बाद उन्होंने कुतिया में कृत्रिम गर्भाधान की, जिससे तीन पप्स पैदा हुये।
- ❖ **1782** में स्पेलेन्जानी के प्रयोग को वैज्ञानिक रोसी और ब्रांची ने भी सफलतापूर्वक दोहराया।
- ❖ **1884 ई.**—मीसेस ने चार साल में 19 कुतिया में कृत्रिम गर्भाधान की जिसमें 15 प्रेग्नेट हुई। उन्होंने बताया कि इस तकनीक को बड़े पैमाने पर प्रयोग में लिया जा सकता है।
- ❖ **1899**—रूसी वैज्ञानिक इवोनोक व उनके साथियों ने पहली बार कृत्रिम गर्भाधान विधि विकसित की। पहली बार उन्होंने गायों और भेड़ों में सफलतापूर्वक कृत्रिम गर्भाधान की। उन्होंने सीमन कलेक्शन और सीमन स्टोरेज तकनीक के बारे में भी जानकारी दी।
- ❖ **1902**—डेन्मार्क के वैज्ञानिक सैंड व स्ट्रीवोल्ड ने घोड़ी में सफलतापूर्वक कृत्रिम गर्भाधान की।
- ❖ **1938**—अमेरिका के प्रो. पैरी ने पहली बार कृत्रिम गर्भाधान कोओपरेटिव संस्था की स्थापना की।
- ❖ **1940**—वैज्ञानिक सोरेंसन ने सीमन की पैकिंग के लिए स्ट्रॉ के उपयोग की शुरुआत की।
- ❖ **1942**—ब्रिटेन में पहली बार डॉ. हनुनॉड व डॉ. वॉल्टन ने कृत्रिम गर्भाधान सेंटर की स्थापना की। वैज्ञानिक पार्क और पोलज ने स्पर्म को बहुत कम टेम्प्रेचर पर फ्रीज तथा स्टोर करने की विधि प्रयोग में ली।
- ❖ **1949**—ब्रिटेन में सीमन को सूखी बर्फ और एल्कोहोल ( $-79^{\circ}\text{C}$ ) पर स्टोर करने की तकनीक खोजी जिसमें स्पर्म की फर्टिलिटी क्षमता में कोई नुकसान नहीं हुआ।
- ❖ **1957**—अमेरिका के कैटल ब्रीडर्स ने फ्रोजन सीमन को लिक्विड नाइट्रोजन ( $-196^{\circ}\text{C}$ ) सीमन को फ्रीज करने तथा स्टोर करने की सफलता हासिल की।
- ❖ **1964**—पहले ग्लास ट्यूब को सीमन भरने के लिए प्रयोग में लिया जाता था। पहली बार सुधार के बाद 1.2 ml. सीमन वाली स्ट्रॉ शुरु हुई। इसके बाद पतली 0.5 ml. सीमन वाली स्ट्रॉ विकसित की गई जिसे 'मिडियम स्ट्रॉ' कहा गया।
- ❖ **1968** में 0.25 ml. सीमन वाली मिनी स्ट्रॉ बनाई गई।
- ❖ **1972**—अमेरिका में ग्लास ट्यूब की जगह पॉलीविनायल स्ट्रॉ का प्रयोग होने लगा।
- ❖ **1996**—भेड़ का प्रथम क्लोन 'डाली' स्कॉटलैण्ड में जुलाई 1996 में बनाया गया।

## 3

## बधियाकरण [Castration]

**बधियाकरण**—बधियाकरण (Castration) वह प्रक्रिया है जिनमें नर अथवा मादा को लैंगिक रूप से अयोग्य बना दिया जाता है। विशेषकर नर में इस विधि से वृषणों (Testicles) को हटाकर या स्पर्मेटिक कोर्ड (Spermatic Cord) को दबाकर पशु के नर लक्षणों (Male Characters) को खत्म कर दिया जाता है।

- ❖ इसमें नर पशुओं के वृषण को हटाकर प्रजनन अयोग्य बनाना होता है।
- ❖ बधियाकरण से नर पशु की प्रजनन क्षमता खत्म हो जाती है।
- ❖ मादा पशुओं में यह क्रिया—स्पेइंग कहलाती है।
- ❖ मादा पशुओं में अण्डाशय को निकाल देते हैं।

### बधियाकरण के उद्देश्य

- ❖ बधियाकरण के कारण नर पशु अपने लैंगिक गुणों (sexual characters) को प्रदर्शित नहीं कर पाता है।
- ❖ बधियाकरण से पशु की वृद्धि जल्दी होती है।
- ❖ अच्छी किस्म का मांस उत्पादित होता है।
- ❖ बधिया करने के बाद पशु की सार संभाल करना आसान होता है।
- ❖ मांस उत्पादन, कृषि कार्य व वजन उठाने में उपयुक्त हेतु।

### बधियाकृत नर के विशेष नाम

- ❖ गाय व भैंस—बुलॉक
- ❖ बकरी—विदर
- ❖ भेड़—वेडर
- ❖ मुर्गी—केपन

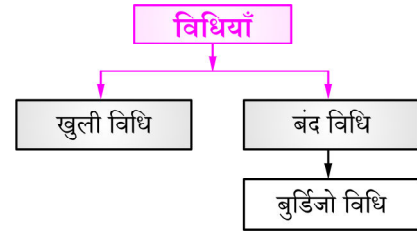
### बधियाकरण में पशुओं की आयु

- ❖ बछड़ा—8-10 सप्ताह
- ❖ सूअर—1-4 सप्ताह
- ❖ मेमना—2-6 सप्ताह
- ❖ घोड़ा—12-14 सप्ताह

**Note**—युवा पशु का 3 माह के भीतर बधियाकरण किया जा सकता है। वयस्क पशु का 1 माह के भीतर बधियाकरण किया जा सकता है।

- ❖ बधियाकरण हेतु उपयुक्त मौसम—शीत ऋतु।
- ❖ कलिंग—बीमार पशु को स्वस्थ पशुओं से दूर करना।

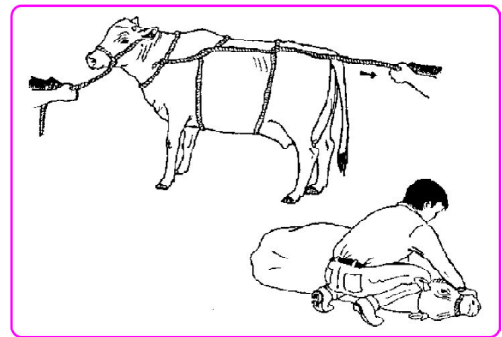
### बधियाकरण की विधियाँ



1. **खुली विधि**—इस विधि को ऑपरेशन क्रिया विधि कहते हैं। इसके तहत नर पशु में चीरा लगाकर दोनों वृषण को हटाया जाता है। इसमें रक्त अधिक बहता है और पशु को काफी समय तक दर्द बना रहता है तथा साथ ही संक्रमण की सम्भावना भी रहती है।

### विधि :

- ❖ इस तरीके में कॉफ को जमीन पर गिराकर अच्छे से नियंत्रित कर लेते हैं।
- ❖ सामान्य निःश्चेतक वृषण कोषों के आधार की त्वचा में रिंग रूप में देते हैं।
- ❖ सबसे पहले वृषण कोषा या स्क्रोटल सैक पर सैवलोन एल्कोहॉल लगाकर निर्जमिकृत करते हैं।
- ❖ इसके बाद तेज धार वाले चाकू अथवा ब्लेड से वृषण कोष या स्क्रोटम पर चीरा लगाते हैं।
- ❖ इसके बाद वृषण को **स्पर्मेटिक कोड (spermatic code)** के साथ खींचकर बाहर निकाल देते हैं।
- ❖ फिर त्वचा पर टांके लगा देते हैं। 7-10 दिन तक एंटीबायोटिक इंजेक्शन देते हैं साथ ही एंटीसेप्टिक घोल या क्रीम से ड्रेसिंग करते हैं।
- ❖ 7-10 दिन बाद टांके काट देते हैं।



2. **बंद विधि**—यह बधियाकरण की सबसे अच्छी विधि है। इस विधि को रक्तहीन बधियाकरण कहा जाता है।

## 5

# दुग्ध दोहन दुग्ध स्रवण काल

## [Milk Exploitation, Milk Yield Period]

### दूध (Milk)

- ❖ स्वस्थ मादा पशुओं से जिनका पालन-पोषण सही ढंग से किया गया हो, वत्स-जनन के 15 दिन पूर्व और 5 दिन पश्चात् जो स्वच्छ एवं ताजा लैक्टियल क्षरण प्राप्त होता है, उसे दूध कहते हैं।
- ❖ पूर्ण दूध उसे कहते हैं जिसमें न्यूनतम वसा (Fat) 3.25% व वसा रहित ठोस पदार्थ (SNF) 8.0% हो।

### दूध दोहन (Milking)

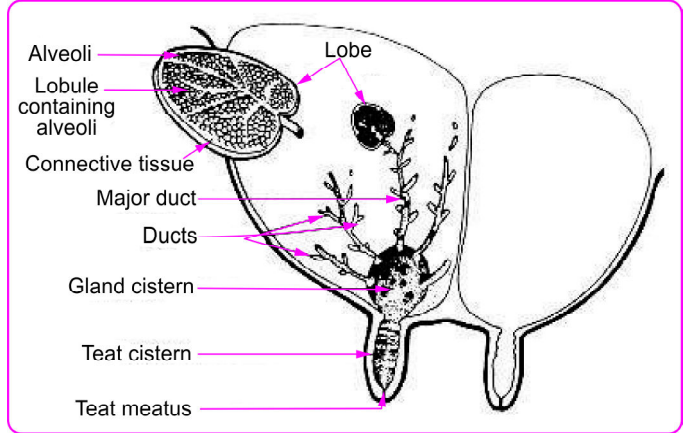
- ❖ दोहन वह प्रक्रिया है जिसमें दूध पशु की गादी (अयन) से निकाला जाता है। दोहन के लिए दूध दोहने वाले व्यक्ति का दक्ष एवं अनुभवी होना जरूरी है ताकि वह निर्धारित समय में पूरा दूध निकाल सकता है।
- ❖ पशु का दूध 5-7 मिनट में निकाल लेना चाहिए, क्योंकि पश्च पिट्यूयरी (Posterior pituitary) से निकलने वाले ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव सीमित समय तक ही रहता है इससे अधिक समय लगने से दूध उत्पादन कम हो जाता है।

### दुग्ध दोहने के उद्देश्य (Purpose of Milking)

- ❖ पशुओं की दुग्ध दोहना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जिसके निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं-
- ❖ शुद्ध, स्वच्छ व अच्छी गुणवत्ता का दूध प्राप्त करना।
- ❖ दूध नहीं निकालने पर पशु के दुग्ध स्रावी तंत्र (Milk Secretary System) को क्षति पहुँच सकती है अतः दुग्ध दोहने के द्वारा पशु को अडर या अयन व थनों को क्षति से बचाना।
- ❖ पशु की दुग्ध उत्पादन क्षमता का पता लगाना जिससे उसकी तुलना अन्य पशुओं से की जा सके तथा यह अगली पीढ़ी को सुधारने के लिए महत्वपूर्ण होता है।

### दुग्ध दोहन के सिद्धान्त (Principles of Milking)

- ❖ अनेक एलव्योलाई (Alveoli) से दूध लोब्यूल (Lobule) से अनेक छोटी नलिकाओं में आता है जिनकी संख्या 12-30 होती है इसके बाद यह ग्रन्थि सिस्टर्न (Gland Cistern) में से थन सिस्टर्न (Teat Cistern) में आता है। अन्त में थन नलिका (Teat Canal) से बाहर निकलता है।



पशु	थनों की संख्या
गाय, भैंस, ऊटनी	4
भेड़, बकरी, घोड़ी, ग्वेनी पिंग	2
सुअरी	18
हाथी व प्राइमेट्स	2
बिल्ली, कुत्ती (कुतिया)	8, 8-10

- ❖ ग्रन्थि सिस्टर्न गोल या अण्डाकार या अनियमित आकार का रिक्त स्थान—500-600 gm तक दूध एकत्रण क्षमता।
- ❖ दुग्ध निर्माण लोब्यूल में उपस्थित एलव्योलाई में।
- ❖ दुग्ध दोहन के समय 60% दूध छोटी नलिकाओं व एलव्योलाई कोशों से आना।
- ❖ स्तन ग्रन्थियों की उत्पत्ति एक्टोडर्म से।
- ❖ स्तन ग्रन्थियाँ, सुडोरिफेरस ग्रन्थियों (Sudoriferous Glands) या स्वेद ग्रन्थियों (Sweat Glands) का रूपान्तरण।

### पशु को चारा खिलाने की विधि

- ❖ दुधारू पशु को दूध निकालने से एक घण्टे पूर्व चारा (Fodder) खिला देना चाहिए, चारा खिलाने के तुरन्त बाद दूध निकालने से चारे के कण जो वातावरण में रहते हैं दूध में गिरकर दूध को गन्दा कर देते हैं। कुछ चारे ऐसे होते हैं जिनको पशु को खिलाने से उनकी सुगन्ध अथवा दुर्गन्ध इनको खाते ही दूध में आ जाती है। जैसे, साइलेज, गोभी, गाजर का चारा आदि। अतः दूध निकालने



## 7

## पशुधन प्रबन्धन

### [Livestock Management]

**परिभाषा**—पशु 'Animal' का तात्पर्य है विभिन्न प्राणी जो कि पादपों के अतिरिक्त होते हैं जो बिना प्रकाश संश्लेषण के पोषण प्राप्त करते हैं और जिनमें केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र उपस्थित होता है।

**पशुधन (Livestock)**—इसमें वे सभी पाले जाने वाले घरेलू पशु (Domesticated animal) आते हैं जो कि मुख्यतया सामाजिक व आर्थिक स्तर (Socio-Economic) को बढ़ाने के लिए पाले जाते हैं इनसे किसी न किसी रूप में आर्थिक लाभ प्राप्त होता है उदाहरण—गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँट, घोड़ा, सूअर, पोल्ट्री आदि।

**पशुपालन (Animal Husbandry)**—यह एक विज्ञान के साथ ही प्रबन्धन की कला है जिसमें घरेलू पशुओं या पशुधन को वैज्ञानिक रूप से पोषण (feeding) प्रजनन (Breeding), आवास व्यवस्था (Housing), स्वास्थ्य देखभाल (Health Care), प्रभावशाली रोग नियंत्रण (disease control) इत्यादि प्रदान कर उनसे उच्चतम उत्पादन प्राप्त किया जा सके।

**पशुधन प्रबन्धन (Livestock Management)**—इसके अन्तर्गत पशुपालन की वे सभी पद्धतियाँ शामिल की गई हैं जिनके उचित अनुप्रयोग व प्रबन्धन से पशुधन से उच्च उत्पादन व लाभ प्राप्त किया जा सके साथ ही वह इस उद्देश्य में सहायता भी करती है। जैसे- प्रजनन (Breeding), निष्कासन (Culling), चयन (Selection), पोषण (feeding) आदि।

❖ पशुओं को स्वस्थ रखने व उनसे बेहतर उत्पादन प्राप्त करने के लिए प्रबन्धन की निम्न पद्धतियाँ भी काम में ली जाती हैं—

1. पोषण (Feeding)
2. पशुओं की आवास व्यवस्था (Housing of Animals)
3. साफ सफाई व निस्तारण (Hygiene and Sanitation)
4. पशुओं को काबू में व नियंत्रित करना (Restraining and Controlling of Animals)
5. पशुओं को चिह्नित करना या पशु पहचान (Identification of Animals)
6. पशुओं की उम्र ज्ञात करना (Ageing of Animals)
7. पशुओं का भार व माप ज्ञान करना (Weighing and Measuring of Animals)

8. बधियाकरण (Castration)
9. टीकाकरण (Vaccination)
10. सींगरोधन (Dehorning or Debudding)
11. ताप, नाड़ी व श्वसन दर ज्ञात करना (Measuring of Temperature, Pulse & Respiration Rate)
12. गुमिंग या मालिश करना (Grooming)
13. व्यायाम कराना (Exercise)
14. दुग्ध दोहन व स्वच्छ दुग्ध उत्पादन (Milking & Clear Milk Production)
15. नवजात बच्चों को पालन पोषण (Calf rearing)
16. विभिन्न अवस्थाओं पर पशु की देखभाल (Care of Animal at Different Stage)
17. पेट के कीड़ों की दवा देना (Deworming)
18. बीमारियों का इलाज व नियंत्रण (Treatment & Control of Diseases)
19. पशुओं के ताप का सही पता लगाना व प्रजनन कराना (Proper heat detection & breeding)
20. बाल काटना (Hair Clipping)
21. खुर काटकर सही आकार प्रदान करना (Horn trimming)
22. हर तरह के फार्म रिकॉर्ड का संधारण (Keeping farm records)
23. नियमित देखभाल व प्रबंधन (Regular care & Management)
24. नियमित निरीक्षण व निर्धारित दिनचर्या (Regular Inspection & Scheduled routine) इत्यादि के द्वारा पशुओं का उचित प्रबन्धन किया जा सकता है जिससे पशु स्वस्थ रहेगा और बेहतर व उच्च उत्पादन देगा।

#### पशु संबोधन परिचय

❖ विभिन्न प्रजातियों के विभिन्न आयु व लिंग के पशुओं को अलग-अलग नाम से जाना जाता है। दैनिक कार्यक्रम में शब्दावली के ज्ञान से पशु प्रबन्धन में समय की बचत व तालिका अंकन में सरलता रहती है।

# 9

## जैविक अपशिष्टों का निस्तारण [Disposal of Organic Wastes]

- ❖ जब भी पालतू पशुओं को रखा जाये और अगर उनके मल-मूत्र का ठीक विधि द्वारा निस्तारण नहीं हो, तो वे मनुष्यों व पशुओं में खतरनाक रोग पैदा करते हैं और साथ ही पानी, हवा और खाद्य पदार्थों को भी प्रदूषित करते हैं।
- ❖ इस तरह के प्रदूषण व बीमारियों को नियंत्रण में रखने के लिये और मनुष्यों तथा पशुओं के स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है।
- ❖ भारत में गौ पशु की संख्या बहुत है और अगर इसका मल मूत्र सही वैज्ञानिक तरीके से इकट्ठा करके रखें तो पशुओं और मनुष्यों में इनसे फैलने वाले रोगों को नियंत्रित करने में बहुत सहायता मिलेगी।

### पशु आवास से दो प्रकार के अपशिष्ट पदार्थ प्राप्त होते हैं

1. गोबर
2. मूत्र

**ठोस अपशिष्ट**—पशुओं से प्रतिदिन गोबर, झूठी छोड़ी हुई आहार सामग्री व पुरानी बिछावन 'ठोस अपशिष्ट' कहलाती है।

**तरल अपशिष्ट**—पशुओं से प्रतिदिन प्राप्त मूत्र फर्श व बर्तनों की धोवन, पशु को नहलाने के बाद प्राप्त गंदा पानी 'तरल अपशिष्ट' कहलाता है।

### पशुओं के मूत्र का निस्तारण (Disposal of Urine)

- ❖ दूध देने वाले पशुओं के घरों का फर्श दुभैद्य होना चाहिए।
- ❖ इसमें फर्श के प्रति 60" लम्बाई पर 1" का ढाल होना चाहिए।
- ❖ पशु के खड़े होने के स्थान के पीछे की तरफ 3" चौड़ी नाली बनानी होती है जिसमें पशु का मल और मूत्र बिना किसी रुकावट के सम्भाला जा सके। यह नाली पशु के पिछले हिस्से की तरफ करीब 7" गहरी और रास्ते (Passage) की तरफ 2 या 2" गहरी होनी चाहिये। ऐसी नाली शुद्ध दूध उत्पादन के लिये काफी लाभदायक होती है और पशु बिना किसी रुकावट के आराम से आ जा सकते हैं।
- ❖ नाली की चौड़ाई 18" भी की जा सकती है नाली की ज्यादा से ज्यादा लम्बाई 70 तक रख सकते हैं, फिर वहाँ पर इसमें दूसरी तरफ की नालियाँ भी लाकर मिलाई जा सकती हैं। इस नाली को पशुशाला के बाहर तक निकाल कर बाहर लगे गुली ट्रेप के साथ

जोड़ दिया जाता है।

- ❖ पशुओं के लिये दोहरी गुली ट्रेप प्रणाली अपनायी जाने से पशुओं के मूत्र और उनके घर व नाली के धोने पर वहाँ से निकलने वाला पानी अलग-अलग ट्रेप द्वारा इकट्ठा करके आगे ले जाया जा सकता है।
- ❖ पशु—घर से बाहर लगाया गया पहला ट्रेप नाली से आने वाले मूत्र को इकट्ठा करता है, जबकि दूसरा ट्रेप कुछ कुछ दूरी पर लगा रहता है और फर्श व नाली को धोने पर आने वाला गन्दा पानी इस ट्रेप के द्वारा आगे स्यूवर नलों में आता है।
- ❖ मूत्र निरीक्षण कक्ष में से आगे बढ़ कर तलछट कक्ष में रुकता है। इस कक्ष के बीच में छिद्रयुक्त प्लेट लगी रहती है जिससे कचरा आदि दूसरे भाग में जाने से रोक दिया जाता है। यह कक्ष सीमेंट व कंक्रीट से बनाया जाता है।
- ❖ मूत्र इस कुण्ड से छन कर आगे संग्रह कुण्ड में जाकर एकत्रित होता रहता है। संग्रह कुण्ड से निकलने वाला नल इस कक्ष में नीचे की ओर झुका रहता है और एक अच्छी सील बनाता है, जिससे कि आगे के कुण्ड से गैसों इसमें न आने पाए। ऐसा होने से अमोनिया गैस तरल अमोनिया में परिवर्तित हो जाती है।
- ❖ इन दोनों कक्षों के ढक्कन हवा रोधक होने चाहिए।
- ❖ एक गाय के मूत्र को इकट्ठा करने के लिये 3 घन फुट का कक्ष बनाया जाता है और यह हर मौसम के लिये उपयुक्त रहता है। इस कुण्ड को सप्ताह में एकबार खाली किया जाता है।
- ❖ इस विधि द्वारा मूत्र से होने वाले प्रदूषण पर नियंत्रण किया जा सकता है।
- ❖ मूत्र को इकट्ठा करके रखने पर, इसे जरूरत हो तब काम में लिया जा सकता है और साथ ही इसकी खेतों में फसल के लिये उपयोगिता भी बढ़ती है।

### पशुओं के गोबर का निस्तारण (Disposal of Manure)

#### 1. जैविक विधि (Biological Method)

- ❖ यह विधि बहुत कम खर्चीली है। गोबर को इस तरह संग्रहित किया जाता है कि उससे मक्खियाँ और बाह्यपरजीवी आकर्षित नहीं हो पाते। सड़ने की क्रिया के कारण, एकत्रित गोबर में तापक्रम बढ़ता है और उससे कुछ गैसों बनती हैं जो कि उसमें रहने वाले जीवाणुओं

## 11

## चारा फसलें [Fodder Crops]

- ❖ पशुओं को स्वस्थ बनाये रखने व अधिक उत्पादन के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें वर्षभर निरन्तर हरी घास उपलब्ध होती रहे, परन्तु यह हमेशा नहीं हो सकती।
- ❖ वर्षा के साथ ही हरी घास बढ़ती है और जमीन को नमी की कमी व हवा में गर्मी के कारण वह सूख जाती है। इस कमी की पूर्ति के लिए साधनों की उपलब्धता के अनुसार हरा चारा उगाया जाता है, परन्तु अनेक कारणों से वार्षिक चारे की फसलें साल भर उत्पादन नहीं दे सकती हैं।
- ❖ ऋतुओं के अनुसार उन्हें बोया जाता है और उनकी लाभदायक पैदावार विशेष समयावधि में हो पाती है। कमी के समय ही काम आवें, इस कारण हरे चारे व घास का संरक्षण किया जाता है। यह कमी का समय सामान्यतः अक्टूबर से नवम्बर तक अप्रैल से जून माह विशेष रूप से होते हैं।

### पशुधन के लिए उपयोगी प्रमुख चारा फसलें

#### 1. बरसीम (Egyptian Clover)

**वानस्पतिक नाम:** ट्राइफोलियम एलेक्जेन्ड्रीनम (Trifolium alexandrinum)—रबी में बोई जाने वाली दलहनी चारा फसलों में बरसीम का प्रमुख स्थान है। यह पशुओं के लिये पौष्टिक हरा चारा प्रदान करने के साथ-साथ भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़ाती है। बरसीम से नवम्बर के अन्त से अप्रैल तक लगभग 1000-1200 क्विंटल हरा चारा प्रति हैक्टेयर प्राप्त होता है। इसे हरे चारे का राजा भी कहते हैं।

**खेत का चुनाव एवं तैयारी**—इसके लिए मटियार दुमट मृदा सर्वोत्तम रहती है। इसकी बुवाई के लिये एक जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से तथा दो जुताई देशी हल से करें। इसके बाद खेत को पाटा लगाकर समतल बनायें एवं उचित आकार की क्यारिया बनायें।

**खाद एवं उर्वरक**—15 से 20 टन गोबर की खाद बुवाई के एक माह पहले खेत में मिलावें एवं 20-30 किलो नत्रजन एवं 80 किलो फॉस्फोरस प्रति हैक्टेयर बुवाई से पहले खेत में डालें।

**उन्नत किस्में**—मसकावी, वरदान, बी. एल.-10, बी. एल.-22, जे. वी.-1, खदरावी, फाईली, पूसा जाइन्ट, टी 780, टी-678, टी-7241

**बीज एवं बुवाई**—25—30 किलो प्रति हैक्टेयर उन्नत बीज को राइजोबियम ट्राइफोलियम नामक जीवाणु कल्चर से उपचारित कर

बुवाई करें। जल्दी व पर्याप्त मात्रा में हरा चारा प्राप्त करने के लिए 2 किलो सरसों का बीज प्रति हैक्टेयर की दर से बरसीम के साथ मिलाकर बुवाई करें। बुवाई के लिए 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर का समय सर्वोत्तम है।

कासनी के बीजों को अलग करने के लिये बीजों को 5 प्रतिशत नमक के घोल में डुबोकर ऊपर तैरते हुए कासनी एवं बरसीम के हल्के बीजों को अलग कर दें। नीचे बैठे स्वस्थ बीजों को सादा पानी से दो-तीन बार धोकर छाया में सुखाने के बाद बुवाई करें। बुवाई हेतु समतल क्यारियों में पानी भर कर गंदला कर लें तथा जब एक से डेढ़ से.मी. पानी रह जाये तब बीज छिड़क दें। सूखी क्यारियों में बुवाई के लिये बीज छिड़कने के बाद रोक चलाकर अच्छी तरह मिट्टी में मिला कर सिंचाई करें।

**सिंचाई**—अच्छे अंकुरण व बढ़ोतरी के लिये बरसीम की बुवाई के बाद 4-5 दिन के अंतराल पर 2-3 हल्की सिंचाई करें तत्पश्चात आवश्यकतानुसार 14-18 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहें।

**कटाई**—बरसीम से नवम्बर के अन्त से अप्रैल तक पाँच कटाई प्राप्त की जा सकती हैं। प्रथम कटाई बुवाई के 50 से 55 दिनों के बाद करें एवं शेष कटाईयाँ 30-35 दिन के अंतराल पर करें। बरसीम से अगर बीज उत्पादन लेना हो तो मार्च के बाद कटाई बंद कर दें। मई तक बीज पककर तैयार हो जाते हैं।

**खरपतवार नियंत्रण**—फसल की प्रारम्भिक अवस्था में दूब, कृष्णनील, गजरी, सैजी, कासनी आदि खरपतवार अधिक उग आते हैं। फसल की प्रारम्भिक कटाई जल्दी करके एकवर्षीय खरपतवारों को नियंत्रित करें अथवा खरपतवारों को काटकर या उखाड़कर खेत से बाहर निकाल दें।

**पौध संरक्षण**—बरसीम में थ्रिप्स, चेपा व चने की लट का आक्रमण होता है, इनसे बचाव के लिए मैलाथियान 50 ई.सी., 1.25 लीटर प्रति हैक्टेयर का छिड़काव करना चाहिए।

#### बरसीम के हरे चारे का रासायनिक संघटन (प्रतिशत)

कच्ची प्रोटीन	कच्चा रेशा	ईथर निष्कर्ष	कैल्शियम भस्म
17 - 19	24 - 26	1.8 - 2.0	1.9 - 2.0 - 14 - 16

#### 2. रिजका (Lucerne or Alfa Alfa)

**वानस्पतिक नाम:** मेडिकागो सेटाइवा (Medicago sativa)  
रिजका हरे चारे की एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है जो दिसम्बर

## 13

## स्वस्थ एवं बीमार पशुओं की पहचान

### [Identification of Healthy and Slack Animal]

स्वस्थ पशु	बीमार / रोगी पशु
<ul style="list-style-type: none"> <li>पशु की वह अवस्था जिसमें पशु के शरीर के सभी तंत्र एवं अंग उसकी आयु, लिंग, कार्य एवं उत्पाद के अनुसार सुचारू रूप से कार्य करते हो एवं पशु के शरीर का तापमान, सांस गति, नाड़ी की गति साधारण हो ऐसा पशु स्वस्थ पशु कहलाता है।</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>पशु की स्वस्थ दशा से विचलित होने की अवस्था को बीमार/रोगी पशु कहते हैं।</li> </ul>

स्वस्थपशु	रोगी पशु
● सदैव सजग व सतर्क रहता है।	● इतना सतर्क नहीं होता है, सुस्त रहता है
● चमड़ी चमकीली होती है।	● चमड़ी खुरदरी व बिना चमक की होती है
● पीठ को छूने से चमड़ी थरथराती है।	● कोई भी चेतना नहीं होती।
● सीधी तरह उठता-बैठता है।	● उठने बैठने में कठिनाई होता है।
● आँखें चमकीली एवं साफ होती हैं।	● आँख में कीचड़ बहता है।
● श्वास (सांस) सामान्य गति से चलती है।	● श्वास लेने में कठिनाई महसूस होती है।
● गोबर व मूत्र का रंग एवं मात्रा सामान्य रहती है।	● गोबर एवं मूत्र का रंग सामान्य नहीं रहता है।
● गोबर नरम और दुर्गंधरहित रहता है।	● गोबर पतला या कड़ा या गाठयुक्त एवं प्रायः दुर्गंध युक्त होता है।
● नाक पर पानी की बूँदें जमा होती हैं।	● नाक पर पानी की बूँदें नहीं होता।
● चारा सामान्य रूप से खाता है।	● चारा कम या बिलकुल नहीं खाता।
● जुगाली क्रिया चबा-चबाकर करता है।	● जुगाली कम करता है या बिलकुल नहीं करता है।
● मूत्र सहजता से होता है।	● मूत्र कठिनता से या रुक-रुक कर होता है।
● पानी सदैव की भांति पीता है।	● पानी कम अथवा नहीं पीता है।
● खुरों का आकार सामान्य होता है।	● खुरों का आकार बाधा होता है।
● गर्भाशय में कोई खामी नहीं होती है।	● गर्भाशय में दोष होता है।
● शरीर पर छूने से तापमान में कोई कमी नहीं पायी जाती है।	● छूने पर शरीर का तापमान ज्यादा गर्म या ठंडा महसूस होता है।
● थन और स्तन सामान्य होते हैं।	● थन और स्तन असामान्य होते हैं।
● पशु अपने शरीर पर मक्खियाँ नहीं बैठने देता।	● शरीर पर मक्खियाँ बैठने पर पशु ध्यान नहीं देता है।
● नाड़ी की गति सामान्य होती है।	● नाड़ी की गति मंद या तेज चलती है।

## 15

## पशुओं में टीकाकरण [Vaccination in Animal]

### विभिन्न पशुओं में टीकाकरण अनुसूची (Vaccination Schedule in Different Animals)

#### गाय भैंस में टीकाकरण अनुसूची (Vaccination Schedule for Cow & Buffalo)

क्र. सं.	बीमारी का नाम	टीके का नाम	टीकाकरण की उम्र	टीकाकरण का समय	टीके की मात्रा व लगाने की विधि	प्रतिरक्षा अवधि
1.	गलघोंटू (एच.एस.)	(i) एच.एस. एलम प्रेसी पिपेटिड वैक्सीन (ii) एच. एस. आयल एडजूवन्ट (iii) रक्षा-एच. एस.	6 माह से ऊपर के पशुओं को 6 माह से ऊपर के पशुओं को 6 माह से ऊपर के पशुओं को	वर्षा से पूर्व अप्रैल से जुलाई तक वर्षा से पूर्व, अप्रैल से जुलाई तक वर्षा से पूर्व, अप्रैल से जुलाई तक	5 ml S/C 2-3ml S/C 2 ml S/C	छः माह एक वर्ष एक वर्ष
2.	खुर एवं मुँहपका (एफ.एम.डी.) स्ट्रेन O, A, C व Asia I	(i) खुरपका-मुँहपका तेलयुक्त वैक्सीन (ii) रक्षा ओवेक (iii) रक्षा एफ. एम.डी.	4 माह पर	अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर, नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी-फरवरी	निर्माता कम्पनी के अनुरूप 2 ml S/C 3 ml S/C	छः माह से एक वर्ष एक वर्ष छः माह
3.	खुरपका मुँहपका+गलघोंटू	रक्षा बायोवैक	3-4 माह		6 ml S/C	एक वर्ष
4.	खुरपका मुँहपका+ गलघोंटू+लंगडिया बुखार	रक्षा ट्रायोवैक	3-4 माह		3 ml I / m	एक वर्ष
5.	गलघोंटू + लंगडिया बुखार (HS+BQ)	H.S.+B. Q. Vaccine	3-4 माह	अप्रैल से सितम्बर	3 मिली S/C	एक वर्ष
6.	एन्थ्रेक्स (Anthrax)	एन्थ्रेक्स वैक्सीन		वर्षा से पूर्व फरवरी से मई	2 मिली S/C	एक वर्ष
7.	ब्रुसिलोसिस (Brucellosis)	ब्रुसेला अबॉर्टस (एस-19) [Brucells Abortus (S-19)]	4-8 माह की बछड़ियों/पाडियों में	दिसम्बर से मार्च तक	5 मिली S/C	जीवन पर्यन्त
8.	लंगडिया बुखार (B.Q.)	बी. क्यू. वैक्सीन	-	वर्षा से पूर्व अप्रैल, मई	2.5 मिली	एक वर्ष
9.	थैलिरियोसिस (Theliriosis)	रक्षावैक-टी (Rakha vacc-T)	3-4 माह	पूरे वर्ष	3 मिली S/C	जीवन पर्यन्त
10.	रैबीज (Rabies) कुत्ते द्वारा काटने पर	रैबीज वैक्सीन 0,3,7,14,28 एवं 90 दिन पर टीका लगाएँ	2 माह से ऊपर	पूरे वर्ष	1 मिली S/C	एक वर्ष
11.	रिन्डर पेस्ट (आर.पी.)	रिन्डरपेस्ट वैक्सीन (R.P. Tissue Culture Vaccine)	4-6 माह	-	1 मिली S/C	एक वर्ष

- ❖ भारत में वर्ष 2021-22 के अनुसार अनुमानित ऊन उत्पादन- 16128.87 हजार किग्रा.
- ❖ भारत में वर्ष 2022-23 के अनुसार राजस्थान का ऊन उत्पादन में प्रथम स्थान (47.98% के साथ) है।

#### शीर्ष पाँच प्रमुख ऊन उत्पादक राज्य-2022-23

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पाँचवाँ
राजस्थान (47.98%)	जम्मू एवं कश्मीर (22.55%)	गुजरात (6.01%)	महाराष्ट्र (4.73%)	हिमाचल प्रदेश (4.27%)

#### मांस उत्पादन

- ❖ विश्व में मांस उत्पादन में भारत का स्थान- आठवाँ
- ❖ भारत में वर्ष 2022-23 के अनुसार मांस उत्पादन- 9.77 मिलियन टन
- ❖ भारत में वर्ष 2022-23 में प्रति व्यक्ति मांस उपलब्धता- 7.10 किग्रा/वर्ष/व्यक्ति
- ❖ कुल मांस उत्पादन के मामले में भारत दुनिया में 8वें स्थान पर है।
- ❖ पिछले वर्ष (2021-22) की तुलना में वर्ष 2022-23 में मांस उत्पादन में 5.13% की वृद्धि हुई है।

- ❖ भारत में वर्ष 2021-22 के अनुसार मांस उत्पादन- 9.29 मिलियन टन
- ❖ राजस्थान में 2021-22 के अनुसार मांस उत्पादन- 221.01 मिलियन टन
- राजस्थान में 2022-23 के अनुसार मांस उत्पादन- 240.28 हजार टन
- राजस्थान में वर्ष 2022-23 में प्रति व्यक्ति मांस उपलब्धता- 3 किग्रा/वर्ष/व्यक्ति
- राजस्थान का मांस उत्पादन में वर्ष 2022-23 के अनुसार 12वाँ (2.46%) स्थान है।
- भारत में वर्ष 2021-22 के अनुसार महाराष्ट्र का मांस उत्पादन में प्रथम स्थान (12.25% के साथ) है।
- भारत में वर्ष 2022-23 के अनुसार उत्तरप्रदेश का मांस उत्पादन में प्रथम स्थान (12.20 % के साथ) है।

#### शीर्ष पाँच प्रमुख मांस उत्पादक राज्य-2022-23

प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	पाँचवाँ
उत्तरप्रदेश (12.20%)	पश्चिम बंगाल (11.93%)	महाराष्ट्र (11.50%)	आंध्रप्रदेश (11.20%)	तेलंगाना (11.06%)

#### महत्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

##### 1. भारत में दूध उत्पादन में भैंस का योगदान है—

- (A) 52% (B) 45%  
(C) 3% (D) 50% [A]

**व्याख्या**—दूध उत्पादन में गाय का योगदान- 45%, अन्य दूध का योगदान- 3% है। भारत का दूध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान है।

##### 2. गाय को 1kg दूध उत्पादन के लिए कितने TDN (कुल पाचक पोषक तत्व) की आवश्यकता होती है—

- (A) 0.50kg (B) 0.32kg  
(C) 0.80kg (D) 1.0kg [B]

**व्याख्या**—गाय में 1ml दूध उत्पादन के लिए अयन से 400-500 उस रक्त संचार होता है। बछड़े को Calf Starter राशन जन्म के दूसरे सप्ताह से देते हैं।

##### 3. देशी गाय को कितने लीटर दूध पर 1kg उत्पादन राशन दिया जाता है—

- (A) 2.0 लीटर (B) 2.5 लीटर  
(C) 1.75 लीटर (D) 3.0 लीटर [B]

**व्याख्या**—संकर गाय/भैंस को 2लीटर दूध के लिए 1kg उत्पादन राशन दिया जाता है।

##### 4. देशी मुर्गी प्रति वर्ष कितना अण्डा उत्पादन देती है—

- (A) 80 (B) 60  
(C) 260 (D) 100 [B]

**व्याख्या**—देशी मुर्गी प्रतिवर्ष 60 अण्डे व विदेशी मुर्गी प्रति वर्ष 260 अण्डे देती है। एक अण्डे से 80 किलो कैलोरी ऊर्जा प्राप्त होती है।

##### 5. भारत में दूध उत्पादन में भेड़-बकरी का कितने प्रतिशत योगदान है—

- (A) 1% (B) 4%  
(C) 20% (D) 27% [B]

**व्याख्या**—भारत में दूध उत्पादन में भैंस का 49 प्रतिशत तथा देशी गाय का 20 प्रतिशत, विदेशी गाय का 27 प्रतिशत तथा भेड़-बकरी का 4 प्रतिशत योगदान है।

##### 6. राजस्थान में दूध उत्पादन में भैंस के दूध का कितने प्रतिशत योगदान है—

- (A) 46% (B) 49%  
(C) 53% (D) 40% [C]

**व्याख्या**—राजस्थान में दूध उत्पादन में गाय का 46 प्रतिशत तथा भैंस का 53 प्रतिशत और भेड़-बकरी का 1 प्रतिशत योगदान है।

##### 7. पशु के कौन-से ब्यांत में सबसे अधिक दूध उत्पादन होता है—

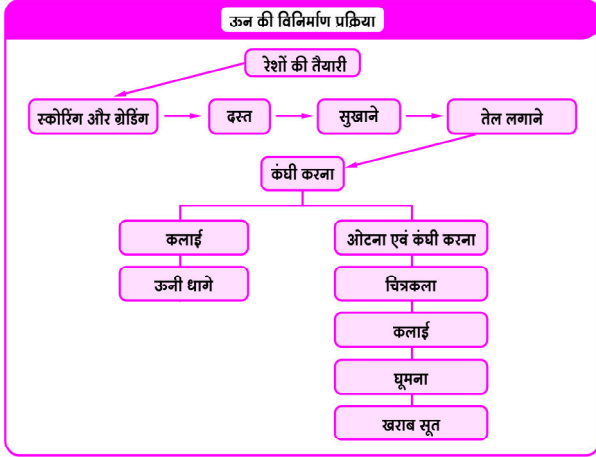
- (A) 8-10 (B) 5-6  
(C) 3-4 (D) 7-8 [C]

**व्याख्या**—पशु ब्याने के 8-10 सप्ताह बाद अधिकतम दूध उत्पादन होता है तथा 3-4 ब्यांत में सबसे अधिक दुग्ध उत्पादन होता है।

## 19

## ऊन कतरन

### [Wool Shearing]



है जैसे न्यूजीलैंड के दक्षिण द्वीप में कैंटरबरी उच्च देश जहाँ हर साल लगभग पांच लाख भेड़ों को अभी भी ब्लेड कैची से काटा जाता है। उन क्षेत्रों के लिए जहाँ कोई संचालित मशीनरी उपलब्ध नहीं है, ब्लेड कैची ही एकमात्र विकल्प है। ऑस्ट्रेलिया में ब्लेड का उपयोग आमतौर पर स्टड मेढ़ों को काटने के लिए किया जाता है।

### मशीन कैची



- ❖ भेड़ कतरना वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा भेड़ का ऊन काटा जाता है। जो व्यक्ति भेड़ की ऊन उतारता है उसे कतरने वाला कहा जाता है। आम तौर पर प्रत्येक वयस्क भेड़ को हर साल एक बार काटा जाता है (बोली के आधार पर, एक भेड़ को “काटा गया”, “कतरना” या “किनारे” (ऑस्ट्रेलिया में) कहा जा सकता है)। वार्षिक कतरन अक्सर एक कतरनी शोड में होती है, एक सुविधा विशेष रूप से प्रति दिन सैकड़ों और कभी-कभी 3,000 से अधिक भेड़ों को संसाधित करने के लिए डिज़ाइन की गई है।

### ब्लेड कैची



ब्लेड कैची

- ❖ ब्लेड कैची में कैची के समान व्यवस्थित दो ब्लेड होते हैं, सिवाय इसके कि काज बिंदु से सबसे दूर अंत में होता है (बीच में नहीं)। काटने वाले किनारे एक-दूसरे से गुजरते हैं क्योंकि कतरने वाला उन्हें एक साथ निचोड़ता है और जानवर की त्वचा के करीब ऊन को कतरता है। ब्लेड कैची का उपयोग आज भी किया जाता है लेकिन अधिक सीमित तरीके से। ब्लेड कैची से भेड़ पर कुछ ऊन निकल जाता है और यह ठंडी जलवायु के लिए अधिक उपयुक्त

- ❖ मशीन की कैची, जिसे हैंडपीस के रूप में जाना जाता है, मानव बाल कतरनी के समान तरीके से काम करती है, जिसमें बिजली से चलने वाले दांतेदार ब्लेड, जिसे कटर के रूप में जाना जाता है, को कंधी की सतह पर आगे और पीछे चलाया जाता है और जानवर से ऊन काटा जाता है। मूल मशीन कैची को केवल दो सार्वभौमिक जोड़ों वाले शाफ्ट द्वारा हैंडपीस से जुड़े एक निश्चित हैंड-फ्रैक द्वारा संचालित किया जाता था, जो गति की बहुत सीमित सीमा प्रदान करता था। बाद के मॉडलों में जानवर पर हैंडपीस की आसान स्थिति की अनुमति देने के लिए अधिक जोड़ होते हैं। प्रत्येक स्टैंड पर इलेक्ट्रिक मोटरों ने आमतौर पर हैंडपीस को चलाने के लिए ओवरहेड गियर को बदल दिया है। कई मामलों में संयुक्त भुजा को लचीले शाफ्ट से बदल दिया जाता है। छोटी मोटरों ने कैची के उत्पादन की अनुमति दी जिसमें मोटर हैंडपीस में होती है; इनका उपयोग आमतौर पर पेशेवर कतरने वालों द्वारा नहीं किया जाता है क्योंकि मोटर का वजन और इसके द्वारा उत्पन्न गर्मी लंबे समय तक उपयोग के साथ परेशान करने वाली हो जाती है।

## 23

# पशुओं की उम्र ज्ञात करना

## [Determining the age of Animals]

### गौवंश, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँट व घोड़े की उम्र ज्ञात करना

#### (Ageing of Cattle, Buffalo, Sheep, Goat, Camel Horse)

**परिभाषा**—‘Ageing’ का अर्थ है उम्र ज्ञात करना। पशुओं की सही उम्र ज्ञात करना आवश्यक है, क्योंकि पशुओं की उम्र पर उनका खाना-पीना, प्रजनन, उत्पादन, बेचना व खरीदना आदि निर्भर करते हैं।

- ❖ पशु की उम्र का सर्वाधिक उपयोग उसके प्रजनन (breeding) व खरीदने में होता है। पशुओं की उम्र का पता लगाना इस संदर्भ में भी महत्वपूर्ण होता है कि प्रत्येक पशु अपने जीवनकाल की एक निश्चित अवधि व उम्र पर सर्वाधिक उत्पादन प्रदान करता है। जैसे-मादा सुअर (sow) 3-4 वर्ष की आयु में सबसे ज्यादा बच्चे (piglets) देती है तथा गाय व भैंस 7 वर्ष की आयु के आस-पास अधिकतम दुग्ध उत्पादन प्रदान करती हैं।
- ❖ पशुओं की उम्र ज्ञात करने के लिये बहुत से तरीके काम में लिये जाते हैं तथा ये तरीके समय की अनुकूलता व साधनों की उपलब्धता के अनुसार एक-दूसरे की जगह काम में लिये जा सकते हैं।

#### पशुओं की उम्र ज्ञात करने के तरीके

##### (Methods of ageing of animals)

पशुओं की उम्र ज्ञात करने के लिये निम्नलिखित तरीके काम में लिये जाते हैं-

1. रिकॉर्ड अथवा अभिलेखों के द्वारा (By Records) यह सबसे आसान तरीका है जिससे पशु की उम्र का यथार्थ व सही रूप से पता किया जा सकता है। इस तरीके की यथार्थता हेतु केवल एक ही शर्त है कि रिकॉर्ड्स सही होने चाहिए। यह तरीका सामान्यतः डेयरी फार्मों, गौशालाओं व उन सभी अन्य संस्थाओं पर काम में लिया जा सकता है जहाँ रिकॉर्ड्स रखे जाते हैं।
2. आयु के अतिरिक्त इन रिकॉर्ड या अभिलेखों से पशु से सम्बन्धित अन्य जानकारियाँ भी प्राप्त की जा सकती हैं। जैसे पशु का उत्पादन, ब्यांत का अन्तर आदि।

#### पशु का शारीरिक अवस्था के आधार पर

##### (Physical Condition)

- ❖ इस तरीके द्वारा पशु की सही व यथार्थ उम्र का निर्धारण कठिन है

तथा उम्र का केवल अंदाजा लगाया जा सकता है तथा वयस्क व बूढ़े पशुओं को पहचाना जा सकता है।

- ❖ वयस्क पशु की त्वचा, कोमल, चमकीली व झुर्रियों रहित तथा सींग सीधे व चमकीले तथा आँखों में चमक होती है, जबकि वृद्ध पशुओं की त्वचा खुरदरी, कम चमकदार व झुर्रियोंयुक्त तथा सींग कम चमकीले व सूखे, दरारोंयुक्त तथा आँखें धँसी हुई होती हैं। मुख से दाँत गिरने लगते हैं हड्डिया कमजोर हो जाती है एवं चाल धीमी हो जाती है। वृद्ध मादा पशुओं में अड़र व थन लटक जाते हैं।

##### अपवाद:

- ❖ वयस्क पशु जिन्हें अच्छा पोषण नहीं मिले या जो बीमार हो वे वृद्ध दिखाई देते हैं। बूढ़े पशु जिनका अच्छा पालन पोषण किया गया हो वे अपेक्षाकृत जवान दिखाई देते हैं।

शरीर के अंग	कम आयु का पशु (वयस्क)	अधिक आयु का पशु (वृद्ध)
त्वचा	कोमल, चमकीली व झुर्रियोरहित (तनी हुई)	खुरदरी, चमक रहित, व झुर्रियों युक्त
आँखें	चमकीली	धँसी हुई
शरीर का आकार	छोटा	बड़ा
हड्डियाँ	सुदृढ़	कमजोर
खुर	आकार में छोटे व चमकीले	आकार में बड़े, चौड़े, व खुरदरे
थनों का आकार	छोटे	बड़े व लटके हुए
गादी	विकसित	लटकी हुई

#### खुरों को देखकर (By Hoofs examination)

- ❖ इस तरीके द्वारा भी पशुओं की उम्र का केवल अंदाजा ही लगाया जा सकता है। जवान पशुओं के खुर छोटे, चमकीले व नस्ल के अनुसार होते हैं जबकि बूढ़े पशुओं के खुर बड़े हुए, खुरदरे, दरारयुक्त व मुड़े हुए होते हैं।
- ❖ पशु को जवान बताकर बेचने वाले व्यक्ति खुरों पर तेल रगड़कर



## 27

## पशु मेले

### [Animal Fairs]

**परिभाषा**—राजस्थान प्रदेश के प्रत्येक अंचल में पशु मेलों की अपनी पृथक से सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्ता है। प्रतिवर्ष राज्य में जिला मुख्यालय, तहसील और नगरपालिका स्तर अथवा गाँवों में लोकदेवता के नाम पर या धार्मिक उत्सवों और पर्वों के साथ-साथ किसी समारोह के अवसर पर मेलों का आयोजन किया जाता है।

- ❖ ऐसे मेलों में जहाँ एक और भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है, वही आपसी सद्भाव और भाईचारा कायम करने की दिशा में भी ये अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- ❖ पशुपालकों को पशुधन का सही लाभ दिलवाने की दृष्टि से नगरपालिकाओं, नगरपरिषद्, तहसील, पंचायत समिति स्तर पर एवं ग्राम पंचायत स्तर पर लगभग 250 पशु मेलों का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है।
- ❖ इन पशु मेलों के अतिरिक्त राज्य सरकार के पशुपालन विभाग द्वारा 10 पशु मेले प्रतिवर्ष आयोजित किये जाते हैं। ये पशु मेले राज्य स्तरीय पशु मेलों की श्रेणी में आते हैं। इन राज्य स्तरीय पशु मेलों से पशुपालकों को प्रति वर्ष 25-30 करोड़ रुपये की आय होती है।
- ❖ पशुपालकों को पशुधन का उचित मूल्य मिलने से उनकी आर्थिक स्थिति निरन्तर सुदृढ़ हुई है। साथ ही राज्य सरकार को प्रतिवर्ष 25-30 लाख रूपयों की आय होती है। कई लाखों रूपयों की आय बिक्री कर विभाग को भी होती है।
- ❖ पशु मेलों का बेहतर विपणन सुविधा उपलब्ध कराने के साथ-साथ, ग्रामीण शिक्षा एवं विकास में भी अत्यधिक योगदान है। पशु मेलों के अवसर पर विभिन्न विभागों द्वारा आधुनिक एवं तकनीकी जानकारी एवं विकास पर आधारित प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जाता है। जिससे ग्रामीण पशुपालक एक ही स्थान पर इन नवीनतम जानकारीयों से अवगत होकर ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में सक्रिय भूमिका निभाता है।
- ❖ प्रदेश में विभिन्न पशुओं की महत्वपूर्ण नस्लें पायी जाती हैं, ये नस्लें भारवाहक क्षमता एवं कृषि कार्यों के लिए सर्वोत्तम हैं।
- ❖ यही कारण है कि प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में बैल, ऊँट, घोड़े, भैंस, भेड़ एवं बकरी आदि पशुओं का क्रय-विक्रय मेला स्थल पर होता है।
- ❖ प्रदेश की नागौरी नस्ल के बैलों की लोकप्रियता के कारण ही यहाँ राजस्थान के अलावा गुजरात, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश तथा पंजाब आदि प्रदेशों से हजारों की संख्या में पशुपालक एवं

- ❖ व्यापारी पशुओं की खरीद फरोख्त के लिए इन मेलों में आते हैं।
- ❖ मेले के अवसर पर विभिन्न पशु प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जाता है। इन प्रतियोगिताओं का मुख्य उद्देश्य समृद्ध एवं उन्नत नस्ल के पशुओं को रखने की ओर प्रेरित करना एवं उस दिशा में पशुपालकों का उत्साहवर्धन करना है।
- ❖ विगत वर्षों में इन पशु मेलों की बढ़ती हुई लोकप्रियता एवं देशी विदेशी पर्यटकों की संख्या में निरन्तर वृद्धि के कारण वर्तमान में राजस्थान पर्यटन विकास निगम मेलों में देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए सुन्दर ग्रामीण परिवेश के पर्यटन गाँव स्थापित करने के साथ-साथ उनके मनोरंजन हेतु सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

#### पशु मेला आयोजन के उद्देश्य

- ❖ पशुपालकों को अपने पशुओं के क्रय-विक्रय हेतु बेहतर पशु विपणन सुविधा उपलब्ध करवाना।
- ❖ पशुधन को अधिक समृद्ध एवं उन्नतिशील बनाने की ओर पशुपालकों को ध्यान आकृष्ट करना।
- ❖ पशुपालन व्यवसाय को बेहतर बनाने हेतु पशु मेलों के माध्यम से विभागीय नवीनतम योजनाओं का व्यापक प्रचार-प्रसार करना ताकि आम पशुपालक इन योजनाओं से लाभान्वित हो सके।
- ❖ सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन कर नवीनतम वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध करवाना।
- ❖ पशु प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा पशुपालकों को समृद्ध एवं उन्नत नस्ल के पशुओं को रखने की ओर प्रेरित करना एवं उस दिशा में पशुपालकों का उत्साहवर्धन करना।
- ❖ मेलों की भाईचारा कायम करने की दिशा में काफी महत्वपूर्ण भूमिका है।
- ❖ पशुपालकों को पशुधन का उचित मूल्य दिलाना।

#### पशुपालन एवं अन्य विभागों द्वारा प्रदत्त सुविधाएँ

- ❖ पशु मेलों में पशुपालकों तथा पशुधन के लिए पानी और रोशनी के साथ-साथ, चिकित्सा की भी पर्याप्त व्यवस्था की जाती है।
- ❖ पशु मेले में प्रशासनिक स्तर पर पशुपालकों की सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने की दृष्टि से अस्थाई पुलिस चौकियाँ स्थापित की जाती हैं।
- ❖ पशुपालकों के मनोरंजन हेतु क्षेत्रीय लोक कलाकारों, नेहरू युवा केन्द्र,

## 28

# गौशाला प्रबंधन साफ-सफाई का महत्व

## [Cow Shed Management, Importance of Cleanliness]

- ❖ पशु आवास व्यवस्था पशु प्रबन्धन का महत्वपूर्ण भाग है। पशुओं को प्रतिकूल मौसम सर्दी, गर्मी एवं वर्षा से तथा जंगली जानवरों से बचाने के साथ ही पशु आवास व्यवस्था पशुओं को स्वस्थ रखने, उत्पादकता बनाए रखने, प्रजनन तथा पोषण में सहयोग करने के अलावा बीमारियों की रोकथाम में भी सहयोग देती है। पशुपालक अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार विभिन्न प्रकार की पशुशालाएँ बना सकते हैं। लेकिन सभी में प्रति पशु स्थान, हवा, धूप तथा प्रकाश की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
- ❖ हमारे देश में साधारणतया पशुपालक आवास बनाते समय वैज्ञानिक तरीकों की पालना नहीं करते। इसका मुख्य कारण यह है कि प्रति परिवार पशुओं की संख्या कम है तथा उनके लिए अलग से आवास न बनाकर घर में ही एक तरफ पशु शेड बना दिया जाता है। इस वजह से पशु की दैनिक दिनचर्या में अधिक मानव श्रम लगता है।

### पशु आवास के उद्देश्य (Objectives of Animal Housing)

- ❖ पशु आवास पशुओं के लिए हवादार व आरामदायक हो जिसमें पशु आराम महसूस करें। पशु आवास पशुओं को मौसम की विषम परिस्थितियों जैसे—गर्मी, सर्दी व वर्षा से बचाता है।
- ❖ पशुओं को जंगली जानवरों तथा चोरों से बचाता है।
- ❖ फार्म पर उपलब्ध संसाधनों का सही ढंग से उपयोग होता है। जैसे—श्रम।
- ❖ नवजात की मृत्यु दर कम होती है।
- ❖ अच्छी गुणवत्ता का उत्पादन प्राप्त होता है।
- ❖ पशुओं की प्रजनन क्षमता एवं उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है।
- ❖ बीमारियों की रोकथाम सही तरीके से की जा सकती है।
- ❖ पशुओं की सही ढंग से उचित देख-रेख होती है।

### पशु आवास व्यवस्था के विभिन्न घटक (Components of Housing)

**आवास की स्थिति (Site)**—पशु आवास हेतु ऐसी जगह का चुनाव करना चाहिए जो उपजाऊ हो, प्रदूषण रहित हो, आस-पास के क्षेत्र में बाढ़ आदि का अन्देशा न हो उस क्षेत्र से आवागमन आसान हो, दुग्ध संग्रह केन्द्र पास हो, स्वच्छ पानी उपलब्ध हो तथा कारखानों आदि से दूर हो ताकि उनसे निकलने वाली हानिकारक गैसों और रसायनों से प्रभावित न हो।

### दिशा (Direction)

- ❖ पशु आवास की लम्बाई पूर्व से पश्चिम की ओर रखनी चाहिए ताकि धूप उत्तरी भाग में अधिक तथा कम से कम धूप दक्षिणी भाग में पड़े।

### दीवारें (Walls)

- ❖ पशुघर की मुख्य दीवार जिस पर छत बननी हो, कम से कम 3 मीटर ऊँची होनी चाहिए और बीच की दीवारें 1.5 मीटर ऊँची रखनी चाहिए। दीवारें चिकनी होनी चाहिए तथा उनमें किसी प्रकार की दरारें नहीं होनी चाहिए।

### छत (Roof)

- ❖ छत उचित ऊँचाई पर बड़ी दीवारों के ऊपर ही बनाई जाती है। ताकि विपरीत मौसम गर्मी वर्षा, एवं सर्दी से बचाव हो सके। छत दीवारों से कम से कम 2.5–3.0 फुट आगे निकली होनी चाहिए। छत के लिए एसबेस्टस (Asbestos) की चादरों का प्रयोग किया जा सकता है।

### फर्श (Floor)

- ❖ फर्श सीमेंट या कंक्रीट का पक्का बनाया जा सकता है। इसे छत से ढके हुए भाग तक ले जाना चाहिए।
- ❖ फर्श फिसलने वाला न हो बल्कि पशुओं को फिसलने से बचाने के लिए ऊपरी सतह खुरदरी होनी चाहिए।
- ❖ दोनों तरफ की फर्श पर ढलान हो जिससे उसकी धुलाई आसानी से हो सके।
- ❖ फर्श में ईट के साथ कुछ हिस्से को कच्चा रखना चाहिए या फर्श के कुछ हिस्से पर रेत डाली जा सकती है।
- ❖ ऐसा फर्श नरम होने के साथ-साथ गर्मियों तथा बरसात के मौसम में पशुओं के लिए आरामदायक होती है।
- ❖ समय-समय पर फर्श को कीटाणुनाशक घोल से धुलाई अथवा छिड़काव करना चाहिए।

### आवश्यकता आदर्श पशु आवास के लिए

### (Essential for Ideal Animal House)

- ❖ एक आदर्श पशु आवास व्यवस्था के अन्तर्गत पशु आवास बनाने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

## 29

# गोबर एवं मूत्र का उचित निष्पादन

## [Proper Disposal of Cow Dung and Urine]

### पशुशाला अवशिष्टों (गोबर, मूत्र) का उचित निष्पादन

पशु अवशिष्टों का समय पर उचित निष्पादन करना आवश्यक रहता है। यह पशु व पशुपालक दोनों के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाने के साथ-साथ पशुशाला के वातावरण को दूषित कर सकते हैं।

**गोबर**—यह पशु अवशिष्टों में मुख्य अवयव है। इससे गोबर गैस प्लांट या कम्पोस्ट खाद बनना ही गोबर का उचित निस्तारण है।

**मूत्र**—आजकल गोबर के साथ-साथ मूत्र व पशुशाला का बिछावन का उपयोग जैविक खेती के लिए उत्पाद तैयार करने में किया जा रहा है। जयपुर की हिंगोनिया गौशाला में गोमूत्र से ऑर्गेनिक फिनाइल तैयार की जा रही है। गौ मूत्र को मिलाकर खेती में उपयोगी कई प्रकार के जैविक उत्पाद तैयार किये जा रहे हैं।

### पशु अवशिष्टों से बायोगैस का उत्पादन

बायोगैस का उत्पादन एक जैव रासायनिक प्रक्रिया द्वारा होता है, जिसके तहत कुछ विशेष प्रकार के बैक्टीरिया पशु अवशिष्ट (गोबर) को बायोगैस में बदलते हैं। इसमें सर्वाधिक मात्रा (75 प्रतिशत) में मीथेन गैस होती है जो बिना धुँआ उत्पन्न किए जलती है।

यह पशु अवशिष्टों, गोबर आदि को कम ताप पर डाइजेस्टर में चलाकर माइक्रोब उत्पन्न करके प्राप्त की जाती है।

- ❖ इसमें मूत्र व गोबर दोनों का निस्तारण हो जाता है।
- ❖ गोबर गैस प्लांट से उत्पन्न गैस ऊर्जा के काम आती हैं जैसे—रोशनी के काम, ईंधन के काम, डीजल-पेट्रोल के स्थान पर इंजन व मशीन चलाने के काम आती है।
- ❖ गोबर गैस से प्राप्त खाद अच्छी गुणवत्ता वाली होती है।
- ❖ गोबर गैस संयंत्र में गोबर व अन्य अपशिष्ट 1:4 में पानी में अच्छी तरह मिलाकर डालते हैं इसका Ph 6-8 के बीच व तापमान 30-40°C होना चाहिए।

### गोबर की खाद (FYM)

- ❖ गोबर की खाद स्थूल कार्बनिक खाद है जिसके मुख्य घटक (अवयव) गोबर, मूत्र और बिछावन
- ❖ गोबर की खाद में मुख्य तत्वों की मात्रा N-0.5%, P-0.25%, K-0.5%
- ❖ गोबर की खाद को सड़कर तैयार होने में 3 माह का समय लगता है तथा इसका प्रयोग खेत में फसल बोने के 1 माह पूर्व करते हैं।
- ❖ विभिन्न फसलों के हिसाब से खेत में गोबर खाद 10 से 25 टन

तक डाली जाती है, फलदार पौधों में 10-20 कि.ग्रा. प्रति पौधा पर्याप्त है।

- ❖ सामान्य फसलों में 10-15 टन व सब्जियों में 20-25 टन प्रति हैक्टेयर गोबर की खाद प्रयोग में लेते हैं।

### गोबर से खाद तैयार करने की विधियाँ

- (i) **वर्तमान में प्रचलित विधि**—हीप विधि (धरातल पर सीधे गैर कर) दोषपूर्ण
- (ii) **संशोधित गड्ढा विधि**—एक पशु के लिये 1 मीटर गहरा, 2 मीटर चौड़ा, 3 मीटर लम्बा गड्ढा एक वर्ष के लिए पर्याप्त रहता है। रेतीली भूमि में गड्ढे पक्के बनाते हैं। इस विधि में खाद 5 से 6 माह में सड़कर तैयार हो जाता है।
- (iii) **ट्रेंच (Trench) विधि**—यह विधि सी.एन. आचार्य द्वारा विकसित की गई।
  - ❖ ट्रेंच विधि द्वारा तैयार खाद में नाइट्रोजन की मात्रा अधिक होती है।
  - ❖ इस विधि में 6 मीटर लम्बी, 1.5 मीटर चौड़ी व 1 मीटर गहराई की खाई खोदकर उसमें खाद तैयार की जाती है।
  - ❖ यह FYM तैयार करने की सर्वोत्तम विधि है।

### अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

**कार्बनिक खाद**—पशुओं के गोबर मल मूत्र आदि से गड्ढा भरने के बाद गड्ढे का मुँह बंद कर देना चाहिए जिससे गोबर सड़कर कार्बनिक खाद के रूप में तैयार हो जाता है। रासायनिक विधि द्वारा ध्यान रहे इस गड्ढे में बरसात या अन्य किसी प्रकार का पानी नहीं जाये।

**थेपड़ी व कण्डे बनाना**—गोबर की थेपड़ी बनाकर सूर्य की किरणों से सुखाकर जलने के बाद बनी राख को खाद के रूप में काम में लिया जाता है। ईंधन के रूप में काम में लिया जाता है।

**रासायनिक विधि द्वारा**—विभिन्न प्रकार के रसायनों को गोबर पर छिड़कने से गोबर में उपस्थित मक्खियाँ अण्डे लार्वा कीटानु व जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। जैसे—इलेबोर यह 1/2 पौण्ड पाउडर 10 लीटर पानी में घोलकर रख दें फिर 10 स्क्वायर फिट गोबर पर छिड़क दें।

**बेन्जीन हेक्सा क्लोराइड**—(B.H.C) या (D.D.T) डाइक्लोराइड फिनाइल ट्राइक्लोरोएथेन—यह 200 ग्राम / प्रति वर्ग फीट के हिसाब से 6 सप्ताह में दो बार छिड़कें।

**बोरेक्स**—12 पौण्ड बोरेक्स के पाउडर को 16 स्क्वायर फीट गोबर पर छिड़क दें यह पौधों के लिए नुकसानप्रद होता है।

## 31

# पशुपालन विभाग की प्रमुख योजनाएँ

## [Major Scheme of Animal Husbandry Department]

- ❖ पशुधन विकास कार्यक्रम को गति प्रदान करने के लिए राज्य में राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड का गठन किया गया है। जिसका मुख्य उद्देश्य कृत्रिम गर्भाधन हेतु आवश्यक हिमकृत वीर्य एवं तरल नन्नजन की वितरण व्यवस्था को समयबद्ध निर्बाध तथा सुगम बनाने, प्रशिक्षण प्रदान करने, उच्च गुणवत्ता वाले नर पशुओं की पहचान करने तथा बछड़ा पालन केन्द्रों को सुदृढ़ करने का है।
- ❖ राज्य में 4 स्थानों पर बछड़ा पालन केन्द्र कार्यरत है।
- ❖ रामसर (अजमेर) में गीर, कुम्हेर (भरतपुर) में मुरा नस्ल के भैंस पाड़ा, नागौर में नागौरी नस्ल के बछड़े एवं मुरा नस्ल के भैंसपाड़ा एवं डग (झालावाड़) में मुरा नस्ल के भैंस पाड़ा एवं गीर नस्ल बछड़ों कापालन/संधारण किया जाता है।
- ❖ राज्य में पशुधन की स्वास्थ्य सुरक्षा, नस्ल सुधार, पशु रोग से बचाव एवं उपचार हेतु विभाग के अधीन वर्तमान में 35 बहुउद्देश्यीय पशु चिकित्सालय, 786 प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सालय, 1709 पशु चिकित्सालय, 102 पशुधन आरोग्य चल इकाई, 198 पशु औषधालय एवं 5638 उपकेन्द्र कार्यरत हैं।

### अश्व विकास कार्यक्रम

- देश के प्रसिद्ध मालानी तथा काठियावाड़ी घोड़े विशेष रूप से बाड़मेर जिले की सिवाणा तहसील क्षेत्र में मुख्यतया पाये जाते हैं।
- ❖ पशुपालन विभाग द्वारा घोड़ों की उन्नत नस्ल एवं सुधार के लिये अश्व विकास कार्यक्रम चलाया जा रहा है।
  - ❖ विभाग राज्य के विभिन्न घोड़ा बाहुल्य क्षेत्रों में अच्छी नस्ल के सांड घोड़े उपलब्ध करवाने के लिये प्रयत्नशील हैं, जिससे कि उन्नत नस्ल के हास को रोका जा सके।
  - ❖ प्रदेश में सिवाणा (बाड़मेर) एवं उदयपुर में अश्व प्रजनन केन्द्रों पर अश्व विकास कार्यक्रम संचालित हैं।

### शूकर विकास कार्यक्रम

- ❖ शूकर विकास कार्यक्रम के उद्देश्य से विभाग के अधीनस्थ शूकर पालन योजना चलाई जा रही है। माँस की गुणवत्ता में सुधार एवं अधिक मात्रा में प्राप्त करने हेतु उन्नत नस्ल के विदेशी शूकरों का राज्य का एकमात्र शूकर प्रजनन केन्द्र अलवर जिले में कार्य कर रहा है।
- ❖ यहाँ लार्ज व्हाइट यार्कशायर शूकरों का संधारण किया जा रहा है।
- ❖ इच्छुक शूकरपालकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार प्रजनन

हेतु नर शूकर अथवा शूकर इकाई जिसमें 3 मादा एवं 1 नर होता है, उपलब्ध कराई जाती है।

- ❖ नर शूकर वजन के आधार पर 30 रु. प्रतिकिलो तथा शूकर इकाई निर्धारित राशि 5000 रु. में उपलब्ध कराई जाती है।
- ❖ इसके अतिरिक्त इच्छुक पशुपालकों को निःशुल्क शूकरपालन का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।
- ❖ शूकरों में आन्तरिक प्रजनन रोकने के लिए 20 शूकरवास गुरुदासपुर (पंजाब) से क्रय किये गये हैं।

### बकरी विकास कार्यक्रम

निर्धन की गाय के नाम से जाने वाले इस सहनशील पशु के रखरखाव व आहार पर कम खर्च होता है तथा हानि की सम्भावना भी कम है। अतः आर्थिक रूप से कमजोर लोगों के परिवारों के जीवन निर्वहन का बकरी पालन एक अच्छा साधन है।

- ❖ राज्य में मुख्यतः देशी नस्ल बरबरी, जमनापुरी, जखराना एवं सिरोही नस्ल की बकरियाँ पाई जाती हैं।
- ❖ 18 वीं पशुपालना के अनुसार राज्य की कुल पशुधन संख्या में बकरी वंश का 10.73 प्रतिशत योगदान है।
- ❖ बकरी से विविध प्रकार के उत्पाद प्राप्त किये जाते हैं, जिनमें दुग्ध, माँस, खाद्य, चमड़ा व बाल आदि हैं, इनमें से दूध व माँस महत्वपूर्ण है।
- ❖ देशी नस्ल की बकरियों की उत्पादन क्षमता कम होने के कारण बकरी पालकों को पूर्ण मूल्य लाभ प्राप्त नहीं होता है। अतः वर्ष 1981-1982 में बकरी विकास की विपुल सम्भावनाओं को देखते हुए भारत सरकार एवं राज्य सरकार के बीच हुए निर्णय के परिणामस्वरूप राज्य में बकरी विकास हेतु इन्डोस्विस परियोजना रामसर, जिला अजमेर में प्रारम्भ की गई।
- ❖ इसका मुख्य उद्देश्य दुग्ध उत्पादन व बकरी के बच्चों के शरीर भार ग्रहण क्षमता में बढ़ोतरी, बकरीपालकों को बकरीपालन प्रशिक्षण द्वारा नई तकनीकी जानकारी देना था।
- ❖ वर्ष 1993-1994 से इन्डोस्विस परियोजना की समाप्ति पर यह कार्य राज्य सरकार द्वारा चलाया जा रहा है।

### गौशाला विकास कार्यक्रम

- ❖ प्रदेश में गौशालाओं के सर्वांगीण विकास हेतु विभाग द्वारा वर्ष 1987-1988 में एक पृथक प्रकोष्ठ की स्थापना की गई है। जिसका

## 33

## अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्य [Other Important Facts]

### पशुपालन, मुर्गीपालन, पशुरोग विज्ञान संस्थान

क्र.सं.	संस्थान	स्थान
1.	IVRI-Indian Veterinary Research Institute- Izzatnagar, Bareilly (UP) / भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान	इज्जत नगर, बरेली, उत्तर प्रदेश, स्थापना-1889
2.	NDRI-National Dairy Research Institute- Karnal (Haryana) राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान (NDRI)	करनाल, हरियाणा, स्थापना-1955
3.	CARI-Central Avian Research Institute-Izainagar. Bareilly (UP) केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान	इज्जतनगर, बरेली (उत्तरप्रदेश)- 1979
4.	CIRB-Central Institute for Research on Buffaloes Hisar (Haryana) केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान	हिसार (हरियाणा) -1985
5.	CIRG-Central Institute for Research on Goats Makhdoom, Farah, Mathura (UP) केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान	मखदूम, फरह, मथुरा (उत्तरप्रदेश) - 1979
6.	CSWRI-Central Sheep and Wool Research Institute -Avikanagar, Malpura. Tonk (Rajasthan) केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान	संस्थान - अविकानगर, मालपुरा, टोंक (राजस्थान) -1962
7.	IGFRI-Indian Grassland and Fodder Research Institute Jhansi (UP) भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान	झांसी (उत्तरप्रदेश)-1962
8.	NIANP-National Institute of Animal Nutrition and Physiology, Adugoddi, Bengaluru, Karnataka राष्ट्रीय पशु पोषण एवं शरीर क्रिया विज्ञान संस्थान,	अडुगोडी, बैंगलुरु, कर्नाटक -1995
9.	NIVEDI-National Institute of Veterinary Epidemiology and Disease Informatics, Hebbal, Bengaluru, Karnataka राष्ट्रीय पशुरोग जानपदिक एवं सूचना विज्ञान संस्थान,	हेवाल, बैंगलुरु, कर्नाटक
10.	CIRC-Central Institute for Research on Cattle Meerut (UP) केन्द्रीय मवेशी अनुसंधान	संस्थान - मेरठ (उत्तरप्रदेश)
11.	CESPTI-Central Frozen Semen Production and Training Institute, Bengaluru, Karnataka केन्द्रीय हिमीकृत वीर्य उत्पादन एवं प्रशिक्षण	संस्थान, बैंगलुरु, कर्नाटक स्थापना -1969
12.	NRC Camel National Research Centre on Camel-Jorbeer. Bikaner (Rajasthan) राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र	जोहड़बीड़, बीकानेर (राजस्थान) - 5 जुलाई, 1984
13.	NRCE- National Research Centre on Equines Hisar (Haryana) राष्ट्रीय अश्व (घोड़ा) अनुसंधान केन्द्र	हिसार (हरियाणा) - 7 जनवरी, 1986 (Sub-Centre Bikaner)
14.	NRCM-National Research Centre on Meat- Boduppal. Hyderabad (Telangana) राष्ट्रीय माँस अनुसंधान केन्द्र	बोट्याल, हैदराबाद (तेलंगाना)
15.	NRC Mithun-National Research Centre on Mithun-Jharnapani, Medziphema, (Nagaland) राष्ट्रीय मिथुन अनुसंधान केन्द्र	झरनापानी, मेदजीफेमा (नागालैण्ड) - 1988

पशु को प्रतिदिन निम्न प्रकार पानी की आवश्यकता होती है

(a) गाय व भैंस	पीने के लिए लगभग 40-60 लीटर प्रतिदिन साफ-सफाई के लिए लगभग 50-70 लीटर प्रतिदिन
(b) भेड़ बकरी	पीने के लिए लगभग 8-12 लीटर प्रतिदिन
(c) घोड़ा	पीने के लिए लगभग 30-40 लीटर प्रतिदिन साफ-सफाई के लिए लगभग 25-35 लीटर प्रतिदिन
(d) ऊँट के लिए	पीने के लिए लगभग 25-35 लीटर प्रतिदिन
(e) कुत्ते के लिए	पीने के लिए लगभग 1-4 लीटर प्रतिदिन
(f) सूअर के लिए	पीने के लिए लगभग 20-25 लीटर प्रतिदिन
(g) मुर्गियों के लिए	पीने के लिए लगभग 18-20 पक्षियों के लिए 4 लीटर प्रतिदिन

शूकर आवास हेतु धरातल (Floor Space) व आहार पानी के टफ :

क्र.सं.	पशु की श्रेणी	आवश्यकता प्रति पशु (वर्ग मी.)		पानी व आहार के टफ की ल. × चौ. (से.मी.) प्रति पशु	शूकरों की संख्या	आवास की ऊँचाई से.मी.
		बन्द क्षेत्र	खुला क्षेत्र			
1.	शूकर नर (Boan)	6.0-7.0	8.8-12.0	60-75×50	-	200-250
2.	ब्याने वाली शूकरी (Sow)	7.0-9.0	8.8-12.0	60-75×50	-	200-250
3.	मांसाहारी शूकर (Fattening pigs)	0.9-1.8	0.9-1.8	25-35×50	-	200-250
4.	शुष्क मादा (Dry Sow/Gilt)	1.8-2.7	1.4-1.8	60-75×50	3-10	200-250

अश्व के लिए आवश्यक धरातल (Floor Space)

पशु की श्रेणी	आवश्यक धरातल प्रति पशु (वर्ग मी.)	
	बन्द क्षेत्र	खुला क्षेत्र
घोड़ा (Horse)	18	150
घोड़ी (Mare)	10	100
ब्यांत कक्ष (Foaling Shed)	40	100
प्रजनन कक्ष (Breeding shed)	23	200

नर पशु को निम्न उम्र में बधिया करना चाहिए

बधियाकरण की उम्र

बछड़ा	8-10 सप्ताह
मेमना	2 सप्ताह
सूअर	1 सप्ताह

Age of weaning & Castration

भेड़ (Sheep)	14 wk	2 wk
मवेशी (Cattle)	9 wk	8-10 wk
सूअर (Swine)	8 wk	1 wk
बकरी (Goat)	16 wk	4 wk

क्र.सं.	रोग का नाम	जीवाणु का नाम	उपनाम	लक्षण
8.	क्षय रोग (Tuberculosis)	Bovine Myco Bacterium or Bovine Type Avian Myco bacterium or Avian Type, Human Mycobacterium or Human Type	1. Pearl's Disease 2. pathisis 3. Great White Plague.	1. यह Zoonotic Disease है। 2. हल्का बुखार रहता है। 3. श्वास लेने में दिक्कत होती है। 4. फेंफड़ों व लिम्फ ग्रन्थियों में ट्यूबरकल गाँठें हो जाती हैं। 5. गर्भाशय के T.B. में गर्भपात भी हो जाता है। 6. पशु धीरे-धीरे कमजोर हो जाता है।
9.	Actinomycosis (एक्टिनो माइसीस)	Actinomyces Bovis (एक्टिनोमाइसिस बोविस)	1. Lumpy Jaw 2. Ray-Fungus disease	1. जबड़े पर कठोर सूजन। 2. सान्द्रता तथा गाढ़ी सड़न युक्त मवाद। 3. घोड़े में Fistulous withers व Pollevel नामक रोग पैदा करते हैं।
10.	Haemorrhagic Septicosis गलघोंदू	Pasteurell Bovis भेड़ व बकरी में (पास्टुरेला बोविस)	1. Shipping Fever 2. Pasteurellosis 3. गलघोंदू	गले में सूजन आना, जीभ को बाहर निकालकर घर्-घर् की आवाज के साथ श्वास लेना।
11.	Salmonellosis साल्मोनेला	Salmonella Typhinurium साल्मोनेला टाइफिरियम	1. Panatyphoid Fever 2. Enteric Fever 3. यह भी Zooratic रोग है।	1. गोबर सीमेन्ट की भाँति रक्त मिश्रित आना। 2. गर्भवती मादा में गर्भपात।
12.	Bacillary Haemoglobinuria (पेशाबी रक्त)	Cl. Haemolyticum (क्लास्ट्रीडियम हेमोलाइसियम)	1. Red Water (लाल पानी) 2. Infectious Haemoglobinuria (संक्रमित पेशाब)	1. पेशाब में खून आना, जिससे m.m. इक्टरेस हो जाती है। 2. पशु घर्-घर् की आवाज के साथ श्वास लेता है। 3. Jugular Pulse + Ve 4. फेंफड़ों व Pleura में Oedema आ जाता है।
13.	Lepto-spirosis यह भी Zoonotic diseases है। लेप्टोस्पायरोसिस (कीचड़ बुखार)	Leptospira Promona	1. Mud Fever 2. Canine Typhus 3. Haemoglobinuria	1. Anaemia 2. Haemoglobinuria, Mastitis 3. Abortion 5-9 माह में 4. Death
14.	Para-Tuberculosis पैरा-क्षय रोग (सोन बीमारी)	Mycobacterium Para tuberculosis (Acid Case)	1. John's Disease 2. Chronic Bacillary Entritis 3. Chronic Bas. Dysentery	1. पशु धीरे-धीरे 4 माह से 15 वर्ष तक कमजोर होता चला जाता है। 2. Emeciation 3. Death
15.	Foot Rot (पैर सड़न)	नेक्रो बेसिलोसिस	1. Infectious Prododermatitis 2. Inter digital Phlegmon	1. खुरों के बीच में (Interdigital Space) में घाव होना। 2. Maggots पड़ जाना। 3. खुर का हट जाना आदि।
16.	Naval III (नाभि रोग)	E. Coli, Strepto व Staphylococcus. (ई-कोलाई)	1. Urachitis 2. Joint ill 3. Omphalitis 4. Poly-anthitis	1. यह नवजात बछड़ों का घातक रोग है। 2. इसमें नाभि में सूजन आ जाती है तथा मवाद पड़ जाती है।

## 35

## विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न

### [Questions asked in Previous Exams]

## 2022

- कीटोसिस जुगाली करने वालों की एक बीमारी है, जो किसके कारण होती है?  
(A) परजीवी संक्रमण  
(B) जीवाणु संक्रमण  
(C) कार्बोहाइड्रेट और वाष्पशील फैटी एसिड का बिगाड़ा हुआ उपापचय  
(D) अमीबा [C]
- रानीखेत नामक बीमारी, निम्न में से किस प्रजाति के जानवर में होती है?  
(A) भेड़ (B) भैंस (C) सूअर (D) कुक्कुट [D]
- राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड का मुख्यालय कहाँ पर स्थित है?  
(A) जयपुर (राजस्थान) (B) आनंद (गुजरात)  
(C) नई दिल्ली (D) करनाल (हरियाणा) [B]
- मवेशियों में गुणसूत्रों की संख्या कितनी होती है?  
(A) 46 (B) 50 (C) 54 (D) 60 [D]
- निम्नलिखित में से कौन-सा जानवर जुगाली करता है?  
(A) सूअर (B) मुर्गा (C) कुत्ता (D) भैंस [D]
- बकरी के वयस्क नर को कहा जाता है—  
(A) बैल (B) सूअर (C) रैम (D) बक [D]
- विश्व में सर्वाधिक गोजातीय जनसंख्या वाला देश कौन-सा है?  
(A) चीन (B) यू.एस.ए. (C) ब्राजील (D) भारत [C]

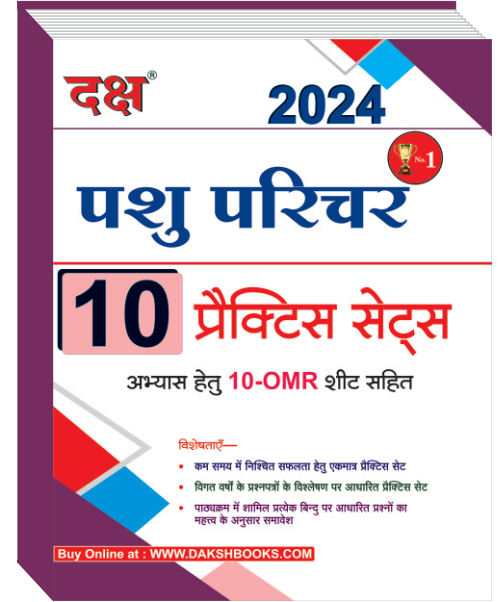
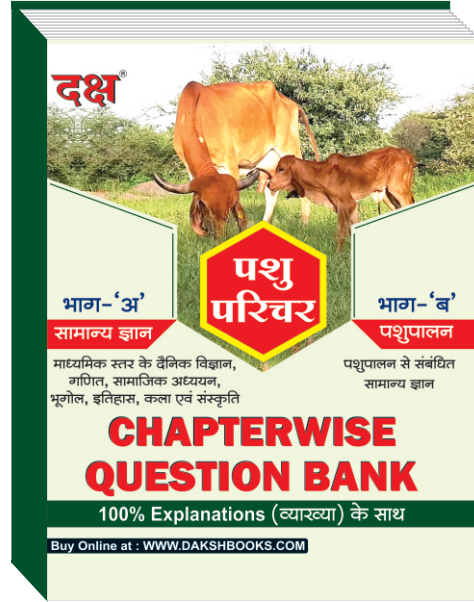
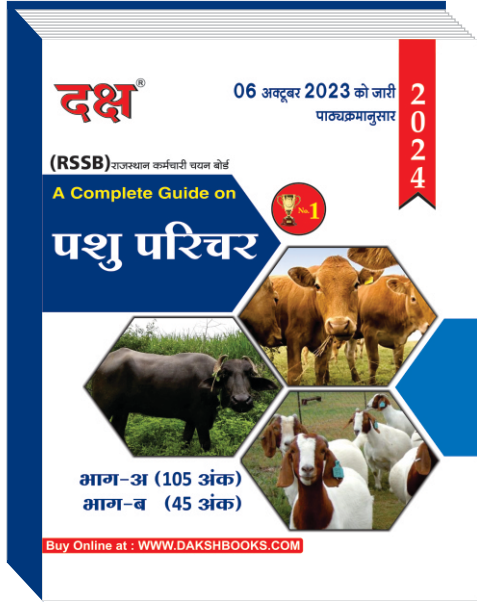
## 2021

- हीफर.....को कहा जाता है—  
(A) नर युवा बैल (B) वयस्क मवेशी  
(C) पहले प्रसव से पहले युवा मादा मवेशी  
(D) पहले स्तनपान के बाद गायें [C]
- निम्न में से बकरी की विदेशी नस्ल है—  
(A) टोगनबर्ग (B) जमुनापारी (C) बीटल (D) सिरोही [A]
- गरबर टेस्ट का उपयोग किया जाता है—  
(A) दूध की अम्लता ज्ञात करने के लिए  
(B) दूध में वसा प्रतिशत ज्ञात करने के लिए  
(C) दूध में प्रोटीन प्रतिशत ज्ञात करने के लिए  
(D) दूध में एस एन एफ प्रतिशत ज्ञात करने के लिए [B]

- नवीनतम पशुधन गणना के अनुसार, भारत के सभी राज्यों में, बकरी की आबादी में राजस्थान का स्थान है—  
(A) प्रथम (B) तीसरा (C) चौथा (D) दूसरा [A]
- मेमने में पूँछ हटाने को कहा जाता है—  
(A) डॉकिंग (B) डिटेलिंग (C) डिटैचिंग (D) नोर्किंग [A]
- मुँहपका-खुरपका रोग है—  
(A) विटामिन की कमी वाला रोग  
(B) परजीवी जन्य  
(C) संसर्गज (D) जीवाणु जन्य [C]
- भारत में पाई जाने वाली ऊँट की कूबड़ युक्त अरेबियन प्रजाति को सामान्यतया कहा जाता है—  
(A) अलपाका (B) विकुना (C) ड्रोमेडरी (D) बैक्ट्रियन [C]
- निम्नलिखित में से किसका प्रयोग पशुओं में विरेचक के रूप में किया जाता है?  
(A) अरंडी का तेल (B) मैग्नीशियम सल्फेट  
(C) एल्युमिनियम हाइड्रॉक्साइड (D) उपर्युक्त सभी [D]
- निम्न में से भेड़ की किस नस्ल को 'राजस्थान की मेरिनो' भी कहा जाता है?  
(A) नाली (B) पुगल (C) मालपुरा (D) चोकला [D]
- ताँबे के रंग का शरीर भैंस की किस नस्ल की विशेषता है?  
(A) मुर्गाह (B) नीली रावी  
(C) कुंडी (D) भदावरी [D]
- 'केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान' स्थित है—  
(A) कुशीनगर (उत्तरप्रदेश) में (B) नई दिल्ली में  
(C) अविकानगर (राजस्थान) में (D) भोपाल में [C]
- हँसिया के आकार का सींग निम्नलिखित में से किस भैंस की नस्ल की विशेषता है?  
(A) सूरती (B) नीली रावी  
(C) मुर्गाह (D) मेहसाणा [A]
- खीस के बारे में निम्न में से कौन-सा तथ्य सही नहीं है?  
(A) खीस को शरीर भार में 20% दर से देना चाहिए।  
(B) खीस को नवजात पशु के जन्म के बाद आधे से दो घण्टे के अन्दर देना चाहिए।  
(C) खीस विरेचक के रूप में कार्य करता है।  
(D) खीस में विटामिन 'ए' भरपूर मात्रा में होता है। [A]



दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए [www.dakshbooks.com](http://www.dakshbooks.com) पर जायें



**नरपत सिंह**  
(8 वर्षों का अनुभव)

Download App  
RAS Baba Deepak Sir  
पशु परिचर  
Video course & Test Series



**RAS Baba  
Deepak Sir**

**दक्ष प्रकाशन**

(A Unit of College Book Centre)

A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)

फोन नं. 0141-2604302

Code No. D-741

₹ 480/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु

[WWW.DAKSHBOOKS.COM](http://WWW.DAKSHBOOKS.COM)

पर ORDER करें

★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★